7

UPHIN51019

दी नेक्स्ट पोस्ट

साप्ताहिक

3 यूपी में रूह कंपाने वाली घटना | 5 उफान पर गंगा | 8 जाधव से अमन तक

वर्षः 02, अंकः 07 | पृष्ठ संख्याः 8 | मूल्यः 1.00 रू. | सोमवार 12 अगस्त, 2024

अपनों से मिले दर्द ने बना दिया दरिंदा

सीरियल किलर की कहानी

अपनों से मिला घाव..गैरों को दिए जख्म, मां के बर्ताव से नफरत, बीवी की बेवफाई से बना हिसंक

बरेली । शाही और शीशगढ़ इलाके में महिलाओं की हत्या करने वाले सीरियल साइको किलर को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। आरोपी कुलदीप गंगवार नवाबगंज इलाके का रहने वाला है। उसने छह महिलाओं की हत्या की बात कबूल की है। पुलिस पूछताछ में सामने आया कि सौतेली मां के सितम और पत्नी के दूसरे व्यक्ति से शादी करने के बाद कुलदीप महिलाओं से नफरत करने लगा था।

इसी वजह से वह वारदातें कर रहा था। शाही और शीशगढ़ थाना क्षेत्र में 14 माह में एक के बाद एक 11 महिलाओं की हत्या का खुलासा पुलिस के लिए सिरदर्द बन गया था। एक सनकी पुलिस तंत्र को लगातार छकाता रहा और वारदात–दर–वारदात करता गया। उस तक पहुंचने के लिए पुलिस ने तकनीक का भी सहारा लिया, पर सफलता नहीं मिली। दरअसल, वह मोबाइल फोन इस्तेमाल ही नहीं करता था। अंततः मुखबिर तंत्र काम आया। कातिल बेनकाब हुआ और छह वारदातें भी कबूलीं। बरेली। सीरियल किलर कुलदीप मानसिक रूप से विक्षिप्त है। वह एक शरीर में कई रूप लिए घूम रहा था। बचपन से ही उसके मन में महिलाओं को लेकर नफरत भर गई थी। निर्जन स्थान पर खास आयु वर्ग की महिलाओं से यह छेड़खानी व दुष्कर्म की कोशिश करता था। विरोध पर उन्हीं के कपड़ों से उनकी हत्या कर निकल जाता था।

जिस सौतेली मां के वजह से हुआ हिंसक उसी से खाता था खौफ

एसपी दक्षिणी गानुष पारीक व एसपी उत्तरी मुकेश चंद्र मिश्रा ने आरोपी कुलदीप से पूछताछ की। उसके बारे में दूसरी जगह से भी जानकारी जुटाई तो पता लगा कि यह संपन्न परिवार का युवक है। उसके पिता के पास अपना मकान और 40 बीघा जमीन है। उसकी दो बहनें हैं। उसकी मां की मौत हो चुकी है। पिता बाबुराम ने उसकी मां के जीवित रहते ही दूसरी शादी कर ली थी।

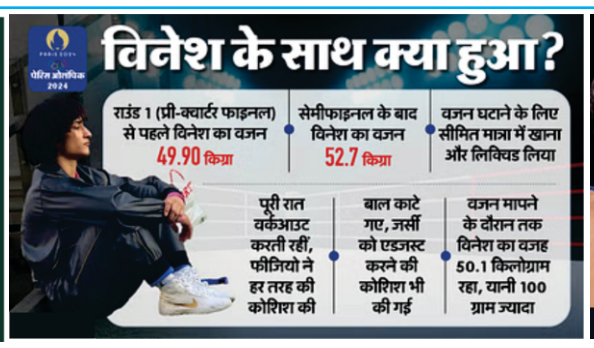

अलविदा कुश्ती

पहलवान विनेश फोगाट ने संन्यास का एलान किया

स्पोर्ट्स डेस्क। पेरिस ओलंपिक में अयोग्य करार दी गईं भारतीय पहलवान विनेश फोगाट ने संन्याय का एलान कर दिया है। उन्होंने मां को याद कर लिखा है कि उनकी हिम्मत टूट चुकी है। उन्होंने 2001–2024 तक की कुश्ती को अलविदा कह दिया।

सबको चौंकाते हुए पहलवान विनेश फोगाट ने संन्यास का एलान कर दिया। उन्होंने समर्थन करने के लिए सबका आभार प्रकट करते हुए कहा कि वे सबकी ऋणी रहेंगी। उन्होंने भावुक सोशल मीडिया पोस्ट में मां को याद करते हुए लिखा कि उनकी हिम्मत टूट चुकी है। इससे पहले पहलवान विनेश ने खेल पंचाट में अपील करते हुए ओलंपिक का रजत पदक संयुक्त रूप से देने की अपील की थी। उनकी अपील पर आज फैसला आने की उम्मीद है। हालांकि, इस फैसले से पहले ही विनेश फोगाट ने संन्यास का एलान करते हुए अपने करोड़ों प्रशंसकों को चौंका दिया। 24 साल के करियर का जिक्र करते हुए लिखा, 'अलविदा कुश्ती 2001–2024।' भावुक 29 वर्षीय पहलवान विनेश ने मां को याद कर उनसे माफी मांगते हुए लिखा, 'मां कुश्ती मेरे से जीत गई, मैं हार गई। माफ करना। आपका सपना, मेरी हिम्मत टूट चुके हैं। इससे ज्यादा ताकत नहीं रही अब।' बता दें कि इससे पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी समेत देश की खेल और सियासी जगत की कई हस्तियों ने विनेश को चैंपियन बताते हुए उनका हौसला बढ़ाया था।

इससे पहले बुधवार देर रात आई खबर के मुताबिक पेरिस के स्थानीय समयानुसार शाम करीब 5.51 बजे उन्होंने खेल पंचाट यानी कोर्ट ऑफ आर्बिट्रेशन ऑफ स्पोर्ट्स (बौ) के सामने खुद को रजत पदक देने की अपील की है। दरअसल, उन्होंने मंगलवार को लगातार तीन मैच जीतकर फाइनल में जगह बनाई थी। हालांकि, बुधवार को उनके वजन को मापा गया तो वह 100 ग्राम ज्यादा निकला। इसके बाद उन्हें डिसक्वालिफाई कर दिया गया था। खेल पंचाट खेल के लिए मध्यस्थता न्यायालय भी कहा जाता है।

क्या अब भी मिल सकता है रजत पदक?

इससे पहले विनेश ने खेल पंचाट (कैस) में ओलंपिक फाइनल से खुद को अयोग्य ठहराए जाने के खिलाफ अपील की और मांग की कि उन्हें संयुक्त रजत पदक दिया जाए। ओलंपिक खेलों या उद्घाटन समारोह से पहले 10 दिनों की अवधि के दौरान उत्पन्न होने वाले किसी भी विवाद के समाधान के लिए यहां खेल पंचाट का तदर्थ विभाग स्थापित किया गया है जो अगले कुछ घंटों में उनकी अपील पर सुनवाई करेगा।

खेल गांव के अंदर पालीक्लिनिक में बिताया दिन

विनेश ने दिन का एक बड़ा हिस्सा खेल गांव के अंदर पॉलीक्लिनिक में बिताया, क्योंकि वजन कम करने के उपाय के कारण उनके शरीर में पानी की कमी हो गई। इन उपायों में भूखा रहना, तरल पदार्थों से परहेज करना और पसीना बहाने के लिए पूरी रात जागना शामिल था। सेमी फाइनल में विनेश से हारने वाली क्यूबा की पहलवान युसनेलिस गुजमैन लोपेज ने फाइनल में भारतीय खिलाड़ी की जगह ली, जहां वह अमेरिका की सारा एन हिल्डेब्रांट से हार गई। विनेश अब लोपेज के साथ संयुक्त रजत पदक विजेता बनने के लिए खेल पंचाट पर भरोसा कर रही हैं। कुश्ती की अंतरराष्ट्रीय संचालन संस्था यूनाइटेड वर्ल्ड रेसलिंग ने हालांकि स्पष्ट कर दिया है कि वजन से जुड़े वर्तमान नियमों में कोई बदलाव नहीं किया जाएगा।

मां.. मेरी हिम्मत टूट गई

24 साल के करियर का जिक्र करते हुए लिखा, 'अलविदा कुश्ती 2001–2024।' भावुक 29 वर्षीय पहलवान विनेश ने मां को याद कर उनसे माफी मांगते हुए लिखा, 'मां कुश्ती मेरे से जीत गई, मैं हार गई। माफ करना। आपका सपना, मेरी हिम्मत टूट चुके हैं। इससे ज्यादा ताकत नहीं रही अब।'

24 साल के करियर का जिक्र करते हुए लिखा, 'अलविदा कुश्ती 2001–2024।'

माना जा रहा था कि विनेश का पदक पक्का हो गया है,लेकिन उन्हें डिसक्वालिफाई कर दिया गया। विनेश के इस मुकाम तक पहुंचने का सफर आसान नहीं रहा है। वह सिर्फ कुश्ती के मैट पर नहीं, बल्कि निजी जीवन में भी एक योद्धा रही हैं। पिछले एक–डेढ़ साल में विनेश का नाम काफी चर्चा में रहा है। सिर्फ पदक जीतने के मामले में नहीं बल्कि विवादों से भी उनका नाता रहा है।

सम्पादकीय

वक्फ़ बोर्ड : सरकार की मंशा पर सवाल

संसद के जारी मानसून सत्र में केन्द्र सरकार ने वक्फ़ बोर्ड कानूनों में संशोधन करने के उद्देश्य से गुरुवार को विधेयक पेश किया जिसका विपक्ष ने जबर्दस्त विरोध किया। इसके साथ ही सरकार में सहयोगी दल टीडीपी का रवैया भी खुलकर समर्थन देने वाला नहीं रहा। बल्कि टीडीपी सांसद जीएम हरीश बालयोगी ने विधेयक के लिए अपनी पार्टी का सशर्त समर्थन करते हुए कहा कि अगर वक्फ संशोधन विधेयक को आगे की जांच के लिए संसदीय समिति को भेजा जाता है तो वे इसका विरोध नहीं करेंगे। टीडीपी के इस हस्तक्षेप और इंडिया ब्लॉक के कड़े विरोध के बाद इस विधेयक को संसदीय समिति को भेजने का फैसला लिया गया। यह एक तरह से संसद में मोदी सरकार के लिए बड़ा झटका है।

सरकार का कहना है कि संशोधन कानून के जरिये वक्फ़ बोर्ड को मिले असीमित अधिकारों को नियंत्रित किया जायेगा, उसके कामकाज को पारदर्शी बनाया जायेगा और उसमें सभी वर्गों, खासकर महिलाओं एवं कमजोर वर्ग के मुसलमानों की भागीदारी बढ़ाई जायेगी। दूसरी तरफ़ विपक्षी दलों का मानना है कि इसके पीछे सरकार की मंशा साम्प्रदायिक ध्रुवीकरण करने की है और वक्फ़ बोर्ड की जमीनों को हथियाना है। इस पर चर्चा जारी है लेकिन यदि संख्या बल के आधार पर सरकार इसे पास कराने में कामयाब होती है तो यह अल्पसंख्यकों में असंतोष और निराशा का एक और कारण बनेगा। मूलतः 1955 में लागू किये गये और साल 2013 में संशोधन के साथ जारी बोर्ड कानून में फिर से बदलाव के अनेक प्रस्ताव हैं। बेहतर कामकाज और संचालन के नाम से 44 संशोधन लाए जाने की सरकार की तैयारी है। सरकार के मुताबिक इस संशोधन द्वारा केंद्रीय पोर्टल और डेटाबेस के जरिये वक्फ के पंजीकरण को व्यवस्थित करना है। इसमें प्रस्ताव है कि किसी भी संपत्ति को वक्फ़ संपत्ति के रूप में दर्ज करने से पहले सभी संबंधितों को नोटिस देना होगा और इसमें राजस्व कानूनों के अनुसार कार्रवाई होगी। सरकार का तो कहना है कि संशोधन विधेयक का उद्देश्य बोर्डों के कामकाज में जवाबदेही और पारदर्शिता लाना तथा महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना है।

सरकार का दावा है कि यह संशोधन मुस्लिम समुदाय की मांग पर किया जा रहा है। जबकि विरोधी दल मानते हैं कि रजिस्ट्रेशन की नयी प्रणाली बोर्डों को परेशान करेगी एवं उनमें शासकीय दखलंदाजी बढ़ाएगी। उनकी शक्तियों में कटौती होगी जो धार्मिक कामकाज में सरकार के हस्तक्षेप जैसा होगा। वक्फ़ बोर्ड कानून 2013 के संशोधन में वक्फ़ बोर्डों को व्यापक शक्तियां देता है। इसलिये भाजपा को इससे तकलीफ़ है। वक्फ़ अधिनियम, 1995 (2013 में संशोधित) की धारा 3 के तहत 'वकीफ़' (जो मुस्लिम कानून द्वारा धार्मिक या धर्मार्थ के रूप में मान्यता प्राप्त किसी भी उद्देश्य के लिए संपत्ति समर्पित करता है) द्वारा 'औकाफ़' (दान की गई और वक्फ़ के रूप में अधिसूचित संपत्ति) को नियमित करने के लिए बना था। 1954 का अधिनियम पहले प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व वाली सरकार के दौरान वक्फ़ के कामकाज हेतु प्रशासनिक संरचना देने के उद्देश्य से बना था। तब वक्फ़ बोर्डों के पास शक्तियां थीं, जिनमें ट्रस्टियों और मुतवल्लियों (प्रबंधकों) की भूमिकाएं भी शामिल थीं। अल्पसंख्यकों के अधिकारों एवं उनकी धार्मिक आजादी में कटौती करने वाले वक्फ़ बोर्ड कानून संशोधन का स्वाभाविकतः कांग्रेस, समाजवादी पार्टी, ऑल इंडिया मजलिस–ए–इत्तेहाद मुस्लिमीन आदि की तरफ से संसद में विरोध किया गया। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने एक्स पर कहा है कि– 'वक़्फ़ बोर्ड में संशोधन एक बहाना है।

रक्षा, रेलवे, राजस्व भूमि की तरह उसकी ज़मीनें बेचना निशाना है। वक्फ़ बोर्ड की ज़मीनें 'भाजपाइयों के लाभार्थ योजना' की श्रृंखला की कड़ी मात्र है। अखिलेश ने कहा कि इस बात की लिखकर गारंटी दी जाए कि वक्फ़ बोर्ड की ज़मीनें बेची नहीं जाएंगी।' एआईएमआईएम के अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने हालिया कहा था कि मोदी सरकार बोर्ड की स्वायत्तता छीनना और उसके कामों में हस्तक्षेप करना चाहती है जो धार्मिक स्वतंत्रता के खिलाफ है। उनका तो आरोप रहा है कि भाजपा बोर्डों और वक्फ़ संपत्तियों के खिलाफ रही है। लोकसभा में भी उन्होंने इन शंकाओं को दोहराया। उन्होंने कहा कि भाजपा सरकार हिंदुत्व के एजेंडे पर काम कर रही है। संरचना में संशोधन से प्रशासनिक अराजकता और बोर्ड की स्वायत्तता खत्म होगी। इस पर सरकार का नियंत्रण हो जायेगा। लोकसभा में भी इसका विरोध करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसा कोई प्रावधान हिंदू एंडोमेंट या सिख गुरुद्वारा प्रबंधन कमेटी के लिए नहीं है। वक्फ़ की सम्पत्तियां सार्वजनिक प्रॉपर्टी नहीं हैं। उन्होंने यह भी पूछा कि क्या सरकार दरगाह और वक्फ़ जैसी परिसम्पत्तियां हथियाना चाहती है?

प्रस्तुत विधेयक को संविधान पर हमला बतलाते हुए कांग्रेस के सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा कि इस विधेयक के माध्यम से सरकार यह प्रावधान कर रही है कि गैर–मुस्लिम भी वक्फ़ बोर्ड के सदस्य होंगे जो धार्मिक स्वतंत्रता पर सीधा हमला है। उनके अनुसार इसके बाद ईसाइयों और फिर जैनियों का नंबर आएगा। उन्होंने चेताया कि जनता अब इस तरह की विभाजनकारी राजनीति को बर्दाश्त नहीं करेगी। माना जा रहा है इस विधेयक संशोधन का संसद की तरह ही देश भर में बड़ा विरोध होगा क्योंकि लोगों को दिख रहा है कि ऐसा भाजपा द्वारा उसकी अल्पसंख्यक विरोधी मानसिकता के कारण किया जा रहा है। पिछले कार्यकालों में यही सरकार तीन तलाक, जम्मू–कश्मीर से अनुच्छेद 370 की समाप्ति जैसे कानून लेकर आई थी, वहीं दूसरी ओर देश भर में, खासकर जहां भाजपा की सरकारें हैं, उनमें कभी हिजाब का मुद्दा बनाया गया तो कहीं कथित लव जिहाद की बातें हुईं। उत्तराखंड में समान नागरिकता संहिता को मान्यता दी गयी। भाजपा का मुख्य विमर्श ही समाज में विभाजन पैदा करना है। एक ओर वह हिन्दू–मुस्लिम करती है तो दूसरी ओर उसने बड़े पैमाने अगड़े–पिछड़ों में दरारें पैदा की हैं। इसी के बल पर भाजपा सरकार ने यह लोकसभा चुनाव लड़ा था। उसकी सीटें काफी घटीं लेकिन भाजपा अब भी सोचती है कि सरकार में बने रहने का यही मार्ग है।

संरक्षित जंगलों में असुरक्षित आदिवासी

स्वतंत्र भारत में भी 'आरक्षित क्षेत्र' घोषित करने के लिए नियमों और प्रक्रियाओं की पूरी तरह से अनदेखी की गई। 'आरक्षित वन' घोषित करने हेतु 'भारतीय वन अधिनियम– 1927' की धारा–4 से 20 तक की लम्बी प्रक्रियाओं से गुजरना होता है। सरकार अधिनियम के तहत एक प्रारम्भिक अधिसूचना जारी करती है कि अमुक भूमि को आरक्षित वन के रूप में घोषित किया जाना है और वन बंदोबस्त अधिकारी स्थानीय समुदाय के सभी अधिकारों को स्वीकार या अस्वीकार कर उनका निपटान करता है। भारत में आदिवासियों/मूलनिवासियों का जंगलों से रिश्ता सहअस्तित्व के सिद्धांत पर आधारित है। ऐतिहासिक दृष्टि से वन एवं वनक्षेत्र आदिवासी जनजातियों का पारंपरिक निवास हुआ करता था, परन्तु जैव–विविधता एवं वन्यजीव संरक्षण के लिए 'आरक्षित क्षेत्र' की परिकल्पना के साथ उन्हें पारंपरिक निवास स्थल से हटाने का काम वर्षों से चल रहा है। सन् 1865 के 'भारतीय वन अधिनियम' के माध्यम से लाई गई औपनिवेशिक वन–नीति के कारण, वनक्षेत्र का बड़ा हिस्सा सरकार के आधीन आ गया, जिसके चलते लाखों वन–निवासियों के पारंपरिक दावे अवैध हो गए। स्वतंत्र भारत में भी 'आरक्षित क्षेत्र' घोषित करने के लिए नियमों और प्रक्रियाओं की पूरी तरह से अनदेखी की गई। 'आरक्षित वन' घोषित करने हेतु 'भारतीय वन अधिनियम– 1927' की धारा–4 से 20 तक की लम्बी प्रक्रियाओं से गुजरना होता है। सरकार अधिनियम के तहत एक प्रारम्भिक अधिसूचना जारी करती है कि अमुक भूमि को आरक्षित वन के रूप में घोषित किया जाना है और वन बंदोबस्त अधिकारी स्थानीय समुदाय के सभी अधिकारों को स्वीकार या अस्वीकार कर उनका निपटान करता है।

गांव के जंगल को 'भारतीय वन अधिनियम–1927' की धारा– 28 के तहत ग्रामवन कहा जाता है। जब सरकार किसी 'आरक्षित वन' या किसी अन्य भूमि को ग्राम समुदाय के उपयोग के लिए आबंटित करती है तो उस भूमि को ग्रामवन भूमि के अन्तर्गत वर्गीकृत किया जाता है। ग्रामवन यानि राज्य सरकार द्वारा ग्रामीण समाज को विधिवत हस्तांतरित किया गया वन। कुछ मामलों में ग्रामवन और वनग्राम शब्द का परस्पर उपयोग किया जाता है, जबकि अधिनियम के तहत ग्रामवन एक कानूनी श्रेणी है, वनग्राम केवल एक प्रशासनिक श्रेणी है।

वर्ष 2002 में 'वन एवं पर्यावरण मंत्रालय' ने उच्चतम न्यायालय द्वारा 'गोदा बरमन विरुद्ध भारत सरकार' के प्रकरण में 1996 में दिये गये फैसले की गलत व्याख्या की थी कि समयबद्ध तरीके से 'आरक्षित क्षेत्र' के वनों से अतिक्रमणकारियों को बाहर निकाला जाए, जबकि उच्चतम न्यायालय ने अतिक्रमणकारियों को बाहर निकालने का आदेश नहीं दिया था। 'वन एवं पर्यावरण मंत्रालय' लगभग 1.5 लाख हेक्टेयर वनभूमि से वन–निवासियों को बाहर करने की बात स्वीकार करता है। 2002 – 2006 से अब तक लगभग तीन लाख आदिवासी परिवारों को जंगल से निकालकर नये 'आरक्षित क्षेत्रों' का गठन किया जा चुका है। केवल मध्यप्रदेश में ही अब तक 125 गांवों को जलाकर राख कर दिया गया है।

पहले यह समझा जाता था कि वन संरक्षण के लिए वन–निवासियों को वन से बाहर करना आवश्यक है। पहली बार 'वनाधिकार कानून' में पारिस्थितिकी तंत्र को बचाने के तरीके में बदलाव लाया गया। इस कानून की प्रस्तावना में स्पष्ट है कि वन–निवासी समुदाय न केवल वन–पारिस्थितिकी का हिस्सा हैं, बल्कि वनों के संरक्षण के लिए अनिवार्य हैं। 'वनाधिकार कानून' की स्पष्ट मान्यता है कि जनजातीय समुदाय की खाद्य–सुरक्षा और आजीविका सुनिश्चित की जाए। कानून में आगे स्वीकार किया गया है कि पहले सरकार के विकास कार्यों के कारण जनजातीय लोगों एवं वन–निवासियों को अपनी पैतृक भूमि से जबरन विस्थापित होना पड़ा था। जनजातियों एवं वन–निवासियों के पट्टे तथा पहुंच के अधिकारों से जुड़ी असुरक्षा को ठीक करने की आवश्यकता है।

'वन्यजीव संरक्षण अधिनियम– 1972' की धारा–36(क) के तहत राज्य सरकार स्थानीय समुदाय से चर्चा के बाद 'अभयारण्य' व 'राष्ट्रीय उद्यान' के नजदीकी क्षेत्रों को 'संरक्षित' या 'आरक्षित' घोषित कर सकती है। 'वनाधिकार कानून' की धारा–2(घ) में कहा गया है कि 'वनभूमि' से किसी वनक्षेत्र के अन्तर्गत आने वाली किसी भी प्रकार की भूमि अभिप्रेत है और उसके अन्तर्गत 'अवर्गीकृत वन,' 'असीमांकित वन' या 'समझे गए वन,' 'संरक्षित वन,' 'आरक्षित वन,' 'अभयारण्य' और 'राष्ट्रीय उद्यान' भी आते हैं। अर्थात इन सभी तरह के जंगलों में वन–निवासियों की पारंपरिक अधिकारों तक पहुंच सुनिश्चित होनी चाहिए। कर्नाटक का 'बीआरटी हिल्स अभयारण्य' वन्यजीवों और मानवों के सहअस्तित्व का बढ़िया उदाहरण है। यहां तक कि सरकार ने भी यह माना है कि वन्यजीवों और मानवों का सहअस्तित्व संभव है। सन् 2016 में पारित 'प्रतिपूरक वनरोपण निधि' (सीएएफ, कैम्पा) में उल्लेख है कि वन–निवासियों की भूमि पर वृक्षारोपण से पहले उनसे परामर्श किया जाना चाहिए, परन्तु वन–विभाग वनों के प्रबंधन के लिए सामुदायिक सहमति में विश्वास नहीं रखता और आदिवासियों की खेती की जमीनों पर वनीकरण अभियान चलाता है। ये वो जमीनें हैं जहां का 'अधिकार पत्र' या तो वन निवासियों को दे दिया गया है या उसके संबंध में अंतिम निर्णय का इंतजार है। जहां भी 'कैम्पा' निधियों के वितरण में वृद्धि हुई है, वहां वन–निवासियों और वन–विभाग या सरकार के बीच परस्पर विरोधी दावों के मामले काफी अधिक हैं। 'पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय' की 'ई–ग्रीनवाच' बेवसाइट के अनुसार 10 राज्यों के 2479 क्षेत्रों में वृक्षारोपण का विश्लेषण करने से पता चलता है कि 70 प्रतिशत से अधिक वृक्षारोपण गैर–वनभूमि की बजाय वनभूमि पर किया गया है। तीव्र गति से बढ़ रही कथित विकास परियोजनाओं से होने वाले विस्थापन का समाधान निकालने के लिए अब तक कोई ठोस प्रयास नहीं किया गया है। तेजी से बढ़ते विस्थापन की सबसे अधिक मार देश के आदिवासी समुदाय पर पड़ रही है। सन् 2016 में 'जनजातीय मामलों के मंत्रालय' द्वारा जारी वार्षिक रिपोर्ट के अनुसार 1950 से 1990 के बीच देश में 87 लाख आदिवासी विस्थापित हुए थे जो कुल विस्थापितों का 40 प्रतिशत है।

'वनाधिकार कानून, 2006' की धारा–5 कहती है कि 'किसी वन–अधिकार धारक, उन क्षेत्रों में जहां इस अधिनियम के अधीन किन्हीं वन अधिकारों के धारक हैं, ग्रामसभा और ग्राम स्तर की संस्थाएं निम्न लिखित के लिए सक्षम हैं' – (क) वन्यजीव, वन और जैव–विविधता का संरक्षण करना, (ख) यह सुनिश्चित करना कि लगा हुआ जलागम क्षेत्र, जलस्रोत और अन्य संवदेनशील क्षेत्र पर्याप्त रूप से संरक्षित हैं, (ग) यह सुनिश्चित करना कि वन में निवास करने वाली अनुसूचित जनजातियों और अन्य परम्परागत वन–निवासियों का निवास किसी प्रकार के विनाशकारी व्यवहारों से संरक्षित है जो उनकी सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत को प्रभावित करती हैं, (घ) यह सुनिश्चित करना कि सामुदायिक वन संसाधनों तक पहुंच को विनियमित करने और ऐसे किसी क्रियाकलाप को रोकने के लिए जो वन्यजीव, वन और जैव–विविधता पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, ग्रामसभा में लिए गए विनिश्चयों का पालन किया जाता है। संविधान के अनुच्छेद 244 की व्यवस्था के मुताबिक 'पांचवीं अनुसूची' के प्रावधानों (धारा–2) में अनुसूचित क्षेत्रों में राज्यों की कार्यपालन शक्ति को शिथिल किया गया है। अनुसूचित क्षेत्रों की प्रशासनिक व्यवस्था में राज्यपाल को सर्वोच्च शक्ति एवं अधिकार दिया गया है।

पांचवीं अनुसूची की धारा 5(1) राज्यपाल को विधायिका की शक्ति प्रदान करती है और यह शक्ति संविधान के किसी भी प्रावधानों से मुक्त है। आदिवासियों से किसी प्रकार के जमीन हस्तांतरण का नियंत्रण राज्यपाल के आधीन आता है। इतने सारे संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों के होते हुए भी अनुसूचित जनजाति एवं अन्य परम्परागत वन–निवासियों का जीवन असुरक्षित है तो कानून का राज कहां है?

गरीब भारत का अचानक बिना किसी तर्क के सोने के आयात पर जोर

गोल्ड डोरे सोने और चांदी का एक अर्ध–शुद्ध मिश्र धातु है जिसे आमतौर पर खदान में बनाया जाता है और फिर आगे शुद्धिकरण के लिए रिफाइनरी में ले जाया जाता है। आयात–आधारित गरीब भारत के लिए सोना इतना महत्वपूर्ण क्यों है, वैसे गरीब देश के लिए जो 100 अंकों के पैमाने पर 28.7 के स्कोर के साथ वैश्विक भूख सूचकांक 2023 में 125 देशों में से 111वें स्थान पर है! सोने और गोल्ड डोरे पर भारतीय आयात शुल्क में अचानक और सबसे तेज कटौती काफी भ्रामक प्रतीत होती है, क्योंकि सोने पर 15 प्रतिशत आयात शुल्क के बावजूद पिछले वित्तीय वर्ष में भारत का पीली धातु का आयात लगभग 30प्रतिशत बढ़कर 45.54अरब अमेरिकी डॉलर हो गया। उसके पहले वाले वर्ष में सोने का आयात लगभग 37अरब डॉलर का था। इस वर्ष के बजट में सोने पर सीमा शुल्क में भारी कटौती करके इसे नौ प्रतिशत घटाकर केवल छह प्रतिशत कर दिया गया, जो अब जून 2013 के बाद सबसे कम है, जबकि गोल्ड डोरेपर सीमा शुल्क 14. 35प्रतिशत से घटाकर 5.35प्रतिशत कर दिया गया है।

गोल्ड डोरे सोने और चांदी का एक अर्ध–शुद्ध मिश्र धातु है जिसे आमतौर पर खदान में बनाया जाता है और फिर आगे शुद्धिकरण के लिए रिफाइनरी में ले जाया जाता है।
आयात–आधारित गरीब भारत के लिए सोना इतना महत्वपूर्ण क्यों है, वैसे गरीब देश के लिए जो 100 अंकों के पैमाने पर 28.7 के स्कोर के साथ वैश्विक भूख सूचकांक 2023 में 125 देशों में से 111वें स्थान पर है! दिसंबर 2023 तक भारत प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के मामले में दुनिया के लगभग 200 देशों में से 129 वें स्थान पर था, हालांकि देश का समग्र आर्थिक उत्पादन पर्याप्त है, और 2024 में यह दुनिया की जीडीपी रैंकिंग में पांचवें स्थान पर है। भारत में पेट्रोलियम के बाद सोना और गोल्ड डोरे आयात की दूसरी सबसे मूल्यवान वस्तु है। प्रभावी रूप से, भारत दुनिया के सोने के आयात में चीन और स्विट्जरलैंड के बाद तीसरे स्थान पर है। स्विट्जरलैंड ज्यादातर निर्यात के लिए सोना आयात करता है। स्विट्जरलैंड दुनिया का सबसे बड़ा सोने का निर्यातक है, जो दुनिया के सोने के निर्यात का 25प्रतिशत हिस्सा है, इसके बाद यूके, यूएस, यूएई और दक्षिण अफ्रीका का स्थान है। 2023–24 में भारत का कच्चे तेल का आयात बिल 132अरब डॉलर था, जबकि इसका सोने का आयात 45अरब डॉलर से अधिक था। देश का 86प्रतिशत आयात तेल पर निर्भर है। पिछले वित्त वर्ष में भारत का व्यापारिक व्यापार घाटा 240.17अरब डॉलर था। चीन जितना चाहे उतना सोना आयात कर सकता है क्योंकि वह किसी भी देश की तुलना में दुनिया का सबसे बड़ा व्यापार अधिशेष रखता है। पिछले साल, चीन का व्यापारिक व्यापार अधिशेष लगभग 823.2अरब डॉलर था। सोने के आयात का चीन के विदेशी व्यापार और उसकी घरेलू मुद्रा युआन की स्थिरता पर बहुत कम प्रभाव पड़ता है। चीन दुनिया का सबसे बड़ा सोना उत्पादक भी है। पिछले जुलाई तक, चीन ने 370मीट्रिक टन सोने का उत्पादन किया, उसके बाद ऑस्ट्रेलिया ने 310 मीट्रिक टन और रूस ने 310मीट्रिक टन उत्पादित किया।

2023 में भारत ने केवल 780 किलोग्राम सोने का उत्पादन किया। भारत की आर्थिक वृद्धि में सोने की बहुत कम भूमिका है। हांगकांग सहित पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना दुनिया का सबसे बड़ा सोना आयातक है। स्टैटिस्टा के अनुसार, 2023 में चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी लगभग 12,514 डॉलर थी। विश्व बैंक ने 2023 में चीन की प्रति व्यक्ति जीडीपी12,174 डॉलर दर्ज की है, जो दुनिया के औसत का 96प्रतिशत है। ट्रेडिंग इकानॉमिक्स के अनुसार, 2023 में भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) 2,239.25 डॉलर था, जो दुनिया के औसत का 18प्रतिशत है। यह भारत द्वारा दर्ज की गयी अब तक की सबसे अधिक प्रति व्यक्ति जीडीपी है।

यह कुछ हद तक हैरान करने वाला है कि इतनी बड़ी मात्रा में सोने का आयात भारत के लिए इतना महत्वपूर्ण क्यों है और किसके लाभ के लिए है। देश के अमीरों और उच्च मध्यम वर्ग के लाभ के लिए भारत में कम शुल्क वाले सोने के आयात के पक्ष में तर्क देने के लिए बहुत कम मान्य सामग्री है। वे मुद्रास्फीति, नकारात्मक व्यापार संतुलन और बढ़ती सरकारी उधारी के सामने घरेलू मुद्रा, रुपये के घटते मूल्य के सामने अपनी संपत्ति के मूल्य की आंशिक रूप से रक्षा करने के लिए लगातार सोना खरीदते हैं।

2023–24 की अंतिम तिमाही में भारत की कुल 136.6 टन सोने की मांग में आभूषणों का हिस्सा 95.5 टन था, जो पिछले वर्ष की तुलना में चार प्रतिशत की वृद्धि थी। मई 2024 में, शादी के आभूषणों का भारतीय आभूषण बाजार में 60 प्रतिशत हिस्सा था, जबकि दैनिक पहनने वाले आभूषणों का हिस्सा 30 प्रतिशत ही था। दिलचस्प बात यह है कि चालू वित्त वर्ष के राष्ट्रीय बजट में सस्ते सोने के आयात पर मुख्य ध्यान दिया गया था। ऐसा लगता है कि इससे स्थानीय सोने के व्यापारियों को सोने के आभूषण उपभोक्ताओं की तुलना में अधिक लाभ हुआ है, जिनके लिए बजट में आयात शुल्क में कमी का दावा किया गया था। इतना ही नहीं, व्यापारियों ने इसका लाभ उपभोक्ताओं को नहीं दिया, बल्कि पिछले सप्ताह के मध्य में 22कैरट आभूषण ग्रेड सोने की कीमत 800 रुपये की तेज उछाल के साथ 64,000 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गयी। 24 कैरेट सोने की कीमत 870 रुपये बढ़कर 69,820 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गयी। व्यापारियों ने भू–राजनीतिक तनाव के कारण सोने की कीमतों में उछाल का बचाव किया, मानो वे तनाव थे ही नहीं या तीन सप्ताह से भी कम समय पहले भारत सरकार के वार्षिक बजट तैयारी सत्र के दौरान कमज़ोर रहे।

इस व्यापार को ज़्यादातर मुंबई और अहमदाबाद स्थित गुजराती व्यापारियों द्वारा नियंत्रित किया जाता है। ठीक दो साल पहले, प्रधानमंत्री ने अहमदाबाद में गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक–सिटी (गिफ्टेक) में स्थित देश का पहला अंतरराष्ट्रीय बुलियन एक्सचेंज (आईआईबीएक्स) लॉन्च किया था। सोने की बढ़ती घरेलू कीमतों का देश के बढ़ते सोने के आयात और खपत पर कोई असर पड़ने की संभावना नहीं है, हालांकि सरकार जानबूझ कर आयात कर में भारी कटौती से राजस्व का एक अच्छा हिस्सा खो देगी।

देश के अमीर बुलियन व्यापारियों के अलावा, सोने और गोल्ड डोरे के लिए आयात शुल्क में भारी कटौती का सबसे ज़्यादा स्वागत प्रमुख सोने के निर्यातक देशों ने किया है। भारत में स्विट्जरलैंड, यूके और यूएई सहित कुछ अन्य देशों से सोने के आयात पर कर की दर घटा दी गयी है और होल्डिंग अवधि को 36 महीने से घटाकर 24 महीने कर दिया गया है। इंडेक्सेशन के साथ लॉन्गटर्म कैपिटल गेन की दर को 20 प्रतिशत से घटाकर इंडेक्सेशन के बिना 12.5 प्रतिशत कर दिया गया है। यह प्रस्ताव पिछले 23 जुलाई से लागू है। इतना ही नहीं गोल्डईटीएफ और म्यूचुअल फंड को फिर से वर्गीकृत किया गया है। गोल्डईटीएफ (एक्सचेंज ट्रेडेड फंड) और म्यूचुअल फंड पर होने वाले मुनाफे पर अब शॉर्ट–टर्म कैपिटल गेन दर पर टैक्स नहीं लगेगा, अगर इसे कम से कम 12 महीने तक रखा जाये। देश के सोने के व्यापार और भारत को सोने के निर्यातक इन परिवर्तनों के संयुक्त प्रभाव से 2024 की दूसरी छमाही में सोने की मांग में कम से कम 50 टन की वृद्धि की उम्मीद कर रहे हैं। यह आश्चर्यजनक है कि 26 दलों के विपक्षी इंडिया गठबंधन के नेताओं ने भी अभी तक सत्तारूढ़ एनडीए सरकार की सोने के आयात शुल्क में भारी कटौती के पीछे की सरकार की मंशा पर सवाल नहीं उठाया है, जिससे मुंबई और अहमदाबाद के मुठ्ठी भर बड़े सोने के व्यापारियों को लाभ पहुंचाने के लिए सरकारी राजस्व का घाटा स्वीकार्य बन गया है। सोने के आयात से रुपये की कीमत और कम होगी और उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलेगा, जो गरीब आदमी की जेब पर भारी पड़ेगा। आदर्श रूप से, सरकार को टैरिफ बढ़ाकर सोने के आयात को नियंत्रित करना चाहिए और सोने की छड़ों और बिस्कुटों की बिक्री को प्रतिबंधित करने का प्रयास करना चाहिए। देश की मौजूदा आर्थिक स्थिति में सोने के आयात के लिए सरकार का जोर काफी रहस्यमय बना हुआ है।

अखिलेश यादव बोले– रियल स्टेट कंपनी की तरह काम कर रही भाजपा

लखनऊ। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने केंद्र सरकार के वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक पर कहा कि भाजपा रियल स्टेट कंपनी की तरह काम कर रही है। उनका मकसद रक्षा, रेल, नजूल लैंड की तरह जमीन बेचना है। सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा रियल स्टेट कंपनी की तरह काम कर रही है। उन्हें लिखकर देना चाहिए कि वक्फ की जमीनें नहीं बेची जाएंगी।

उन्होंने सोशल मीडिया साइट एक्स पर लिखा कि 'वक्फ़ बोर्ड' का ये सब संशोधन भी बस एक बहाना है। रक्षा, रेल, नजूल लैंड की तरह ज़मीन बेचना निशाना है। वक्फ़ बोर्ड की जमीनें, डिफेंस लैंड, रेल लैंड, नजूल लैंड के बाद 'भाजपाइयों के लाभार्थ योजना' की शृंखला की एक और कड़ी मात्र हैं। भाजपा क्यों नहीं खुलकर लिख देती : 'भाजपाई–हित में जारी'

इस बात की लिखकर गारंटी दी जाए कि वक्फ़ बोर्ड की ज़मीनें बेची नहीं जाएंगी। भाजपा रियल स्टेट कंपनी की तरह काम कर रही है। उसे अपने नाम में 'जनता' के स्थान पर 'जमीन' लिखकर नया नामकरण कर देना चाहिए : भारतीय जमीन पार्टी। बता दें कि केंद्र सरकार वक्फ बोर्ड संशोधन विधेयक को लोकसभा में पेश करने वाली है जिसे लेकर बयानबाजी का दौर जारी है।

परिवार के चार सदस्यों को दिन तो दो को रात में नही देता दिखा

बलिया,संवाददाता। उत्तर प्रदेश के बलिया जिले में एक ऐसा परिवार है, जहां चार सदस्यों को दिन को दो को रात में दिखाई नहीं देता है। हैरान करने वाली बात तो ये है कि सरकारी योजनाओं से यह वंचित हैं, जिससे दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिल पाता है। बलिया थाना क्षेत्र के टकरसन गांव में एक परिवार ऐसा है, जो आंख की अजीब बीमारी से पीड़ित है। आठ सदस्यों वाले इस परिवार के चार सदस्यों को दिन में नहीं दिखाई देता तो दो सदस्यों को रात में नहीं दिखता है। नेपाल, बिहार के छपरा और बलिया जिला अस्पताल में इलाज कराने के बाद भी समस्या जस की तस है। विकास खंड हनुमानगंज अंतर्गत टकरसन गांव निवासी राम प्रवेश पासी के छह बेटे हैं। इनमें हरि पासी (35), रामू (27), भानू (22), जयराम (20) को दिन में नहीं दिखाई देता है। सुनीता देवी (30) पत्नी रामू पैर से विकलांग हैं। सुनील (34) और राज बहेलिया (18) को रात में नहीं दिखाई देता। इस परिवार के पास न तो छत है और न ही राशन कार्ड। उज्ज्वला गैस, शौचालय समेत अन्य सरकारी योजनाओं की सुविधा भी अब तक इस परिवार को नहीं मिल पाई हैं। परिवार के लोगों ने पीड़ितों का नेपाल, छपरा और जिला अस्पताल सहित कई नेत्र अस्पतालों में इलाज कराया, लेकिन कहीं राहत नहीं मिली। परिजनों ने बताया कि पीड़ितों को बचपन से ही कम दिखाई देने लगा था। किशोरावस्था आते–आते बीमारी चरम पर पहुंच गई। परिवार के मुखिया जैसे तैसे रिक्शा चलाकर सभी का पालन पोषण करते हैं। अगर रिक्शा लेकर वह शाम को कहीं फंस जाते हैं तो घर पहुंचना किसी अग्निपरीक्षा से कम नहीं होता। परिजनों ने बताया कि वे सभी सरकारी सुविधाओं से वंचित हैं। कहा कि विभागीय अधिकारियों को कई बार अवगत्त कराया गया, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। परिवार परेशान है। सरकारी मदद मिले तो जीवन आसान हो जाएगा।

कूड़े में मिला नवजात का शव, नोच रहे थे कुत्ते

यूपी में रूह कंपाने वाली घटना

गोरखपुर। गोरखपुर के कोतवाली थाना क्षेत्र के मुफ्तीपुर मोहल्ले में नवजात के शव को कूड़ेदान में फेंके जाने के मामले में अमर उजाला के हाथ सीसीटीवी कैमरे की रिकार्डिंग लगी है। इसमें साफ दिख रहा है कि रात में सफेद कपड़े में लिपटे नवजात के शव को नल के पास रखा गया। बगल में ट्रांसफार्मर से पहले दाएं तरफ थोड़ी सी खाली जगह है। अलसुबह नगर निगम का सफाई कर्मी मौके पर आता है और कूड़ा उठाने वाले बेलचे से पोटली को उठाकर ट्रांसफार्मर के पास कूड़ेदान में फेंक देता है। थोड़ी देर में इसी कपड़े को खोलकर कुत्ते शव को नोचने लगते हैं। स्थानीय लोगों ने पुलिस को फोन कर जानकारी दी। इसी के बाद मौके पर पुलिस आती है। संस्कार मैरेज हाउस की गली से आगे आकर दयानंद कन्या इंटर कॉलेज की तरफ एक रास्ता मुड़ता है। इसी मोड़ पर एक तरफ मजार है और सरकारी नल लगा है। इस गली में अस्पताल है और आगे की तरफ रिहायशी इलाका है। सीसीटीवी कैमरे की रिकॉर्डिंग में सुबह 5 बजकर 26 मिनट पर नगर निगम के कूड़े की गाड़ी लेकर आता सफाई कर्मी दिखता है। कूड़ा गाड़ी, ट्रांसफार्मर से थोड़ी दूर खड़ी करता है। 5 बजकर 26 मिनट, 27 सेकेंड पर सफाई कर्मी बेलचा हाथ में लिए पहले ट्रांसफार्मर के पास आता है। फिर इधर–उधर देखता है। इसके बाद ट्रांसफार्मर के बगल में मजार और नल के बीच खाली स्थान से सफेद कपड़े में लपेटा कुछ कूड़ेदान के पास फेंकता है और फिर जिधर से आया रहता है, उसी तरफ चला जाता है।

बेलचे से कपड़े में लपेटा शव कूड़े में फेंकते देख साइकिल से जा रहा राहगीर भी सफाई कर्मी और कूड़ेदान की तरफ संदिग्ध नजरों से देखता है और आगे बढ़ जाता है। स्थानीय लोगों ने बताया कि नवजात के शव को रात के समय ही इस खाली जगह पर लाकर रखा गया होगा। रात में सवा दस बजे से लेकर सवा बारह बजे तक इलाके में बिजली भी गुल थी। इसी का फायदा उठाकर गली और मोहल्ले को करीब से जानने–समझने वाले ने इस जगह नवजात के शव को रख दिया होगा। दिन के वक्त अगर ऐसा होता तो जरूर कुत्ते या अन्य किसी की नजर इस पर पड़ ही जाती।

सुबह सफाईकर्मी ने जब इसे उठाकर कूड़ेदान में फेंका तो लपेटा कपड़ा खुल गया था। इससे बच्चे का शव कपड़े के बाहर आ गया। इसके बाद कुत्ते नवजात के शव को नोचने लगे। स्थानीय लोगों का भी कहना है कि सफाई कर्मी को सफेद कपड़े में लिपटे सामान को लेकर पूरी जानकारी रही होगी। अगर पुलिस सीसीटीवी के आधार पर सफाई कर्मी से सख्ती के साथ पूछताछ करे तो पूरी कहानी अपने आप खुल जाएगा।

शव मिलने के थोड़ी देर में ही दर्ज हुआ केस

कोतवाली पुलिस ने शव मिलने के थोड़ी देर के अंतराल पर ही बीएनएस 94 के तहत अज्ञात पर केस दर्ज कर लिया है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भी भेज दिया था। दरअसल, भारतीय दंड संहिता में बीएनएस 94 को धारा 318 में दर्ज किया जाता था। इसके तहत नवजात को गोपनीय तरीके से जीवित अथवा मृत फेंकना अपराध की श्रेणी में आता है। लेकिन, इस मामले में माता–पिता पर भी बीएनएस धारा 91 के तहत विधिक कार्रवाई भी जरूरी है।

चार या पांच दिन का रहा होगा नवजात

सूत्रों ने बताया कि नवजात चार से पांच दिन पहले जन्म लिया होगा। कुत्ते जब उसे नोच रहे थे, तो खून नहीं बह रहा था। शहर के चिकित्सक डॉ पंकज दीक्षित ने बताया कि अगर शिशु की मौत हुए चार घंटे से अधिक बीत गए होंगे तो उसके शरीर का खून सूख गया होगा। पोस्टमार्टम के बाद ही स्पष्ट होगा कि मौत कैसे हुई। पोस्टमार्टम से जुड़े सूत्रों ने बताया कि बच्चे का शव आठ से दस घंटे पहले का लगता है।

72 घंटे बाद होगा पोस्टमार्टम

शव का पोस्टमार्टम 72 घंटे बाद किया जाएगा। दरअसल, अज्ञात शव के लिए ज्ञात वारिश की तलाश पुलिस करती है। इसके तलाश होने के बाद पंचनामा भरके ही पोस्टमार्टम किया जाता है, लेकिन अज्ञात शव का अगर 72 घंटे तक कोई वारिश नहीं आता है तो पुलिस–प्रशासन के सहयोग से पंचनामा भर के पोस्टमार्टम की कार्रवाई की जाएगी। इसका रिकॉर्ड संबंधित थाने में रखा जाता है।

इन धाराओं में केस दर्ज कर होनी चाहिए कार्रवा

धारा 91 बीएनएस : शिशु को जीवित पैदा होने से रोकने या जन्म के बाद मृत्यु कारित करने के आशय से किया गया कार्य।
सजा : दस वर्ष तक कारावास और आर्थिक दंड
धारा 94 बीएनएस : नवजात को गोपनीय तरीके से जीवित अथवा मृत फेंकना अपराध है।
सजा : दो साल की कैद या जुर्माना या फिर दोनों।

गोरखपुर में 154 साल बाद दर्ज हुई थी पहली एफआईआर

जिसके जन्मदाता ने ही उसे मार डाला या लावारिस छोड़ दिया, फिर उसके मामले में कौन सुनेगा? अमूमन नवजात का शव मिलने या उसके जीवित लावारिस मिलने पर पुलिस कोई मामला दर्ज ही नहीं करती। अमर उजाला ने नवजात के लावारिस मिलने पर 2019 में यह मामला उठाया तो धारा–317 के तहत गोरखपुर में पहली एफआईआर दर्ज हुई थी। 2019 में तत्कालीन डीजीपी ओपी सिंह के निर्देश पर रेलवे जीआरपी थाना ने पहला केस दर्ज किया था। अमर उजाला की खबर का संज्ञान लेकर अधिवक्ता अभिनव तिवारी ने थाने में तहरीर दी थी। इसी के आधार पर केस दर्ज कर कार्रवाई की गई। वरना इससे पूर्व जनरल डायरी में शिशु के मिलने का उल्लेख करके पुलिस अपनी जिम्मेदारी से पल्ला झाड़ लेती थी।

डीजीपी ने जारी किया था सर्कुलर

नवजात शिशु के मामलों में पुलिस का कुतर्क रहता है कि कोई तहरीर ही नहीं देने वाला तो वह एफआईआर कैसे दर्ज करे। अमर उजाला की पहल पर तत्कालीन डीजीपी ओम प्रकाश सिंह (ओपी सिंह) ने सर्कुलर जारी करके इस समस्या का समाधान भी किया था कि नवजात शिशु के मामले में तहरीर का इंतजार किए बिना, पुलिस स्वयं वादी बनकर मामला दर्ज करे। इसके बाद गोरखपुर में कई मामले दर्ज हुए। कुछ मामलों में पुलिस ही वादी भी बनी। आज भी यह सर्कुलर प्रभावी है।

10 लाख युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए शुरू होगा मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान

लखनऊ,संवाददाता। मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान के अंतर्गत सामान्य वर्ग के अलावा, ओबीसी, महिला, दिव्यांगजन और एससी, एसटी के पुरुष के अलावा महिलाओं को उद्यम स्थापित करने पर योगी सरकार अनुदान देगी। उत्तर प्रदेश के शिक्षित और प्रशिक्षित युवाओं को स्वरोजगार से जोड़ने के लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान प्रारंभ करने के निर्देश दिए हैं। गुरुवार को एक उच्चस्तरीय बैठक में मुख्यमंत्री ने कहा कि वित्तीय वर्ष 2024–25 के मूल बजट में सरकार ने 'मुख्यमंत्री युवा उद्यमी विकास अभियान' का प्रावधान किया था, अब समय आ गया है कि इस पर क्रियान्वयन प्रारंभ कर दिया जाए।

अभियान के संबंध में एमएसएमई विभाग के प्रस्तुतिकरण का अवलोकन करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि यह योजना स्वरोजगार सृजन के प्रयासों में बड़ी भूमिका निभाने वाली होगी। योजना के बारे में अधिकाधिक युवाओं को अवगत कराया जाए ताकि युवा प्रोत्साहित हों और आत्मनिर्भर होकर अपनी आजीविका कमा सकें। बैठक में प्रमुख सचिव, एमएसएमई ने मुख्यमंत्री को बताया कि अभियान के तहत प्रतिवर्ष 1,00,000 युवाओं को बैंकों से ऋण दिलाकर वित्तीय अनुदान दिया जाएगा, जिससे प्रतिवर्ष 01 लाख सूक्ष्म उद्यम प्रतिवर्ष स्थापित हो सकेंगे। इस प्रकार आगामी 10 वर्षों में 10 लाख (एक मिलियन) युवा स्वरोजगार से जुड़ सकेंगे।

मुख्यमंत्री ने कहा कि अभियान के तहत सामान्य वर्ग के अलावा, ओबीसी, महिला, दिव्यांगजन तथा एससी, एसटी के पुरुष के अलावा महिलाओं को उद्यम स्थापित करने पर अनुदान देने का प्रावधान हो, साथ ही, मार्जिन मनी पर भी सब्सिडी दिया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि युवा उद्यमियों को यथासंभव ब्याज मुक्त ऋण उपलब्ध हो, इसके लिए एक तय अवधि तक ऋण के ब्याज उपादान और सीजीटीएमएसई कवरेज की सुविधा भी दी जाए।

उन्होंने निर्देश दिए कि योजना के सही क्रियान्वयन और सतत मॉनीटरिंग के लिए आकांक्षात्मक विकास खंडों में तैनात सीएम फेलो की तर्ज पर यहां भी हर जिले में योग्य युवाओं की तैनाती की जाए। उन्होंने यह भी कहा कि उद्यम स्थापित करने के लिए वित्तपोषण से पहले युवाओं को विधिवत प्रशिक्षण भी दिलाया जाना चाहिए। नए उद्यमियों को उनके उत्पाद की पैकेजिंग, ब्रांडिंग व मार्केटिंग में भी मदद करें।

विरासत गलियारा: टीम ने लगाया निशान, लोगों के सवाल–

गोरखपुर। बुधवार को जब टीम हजारीपुर पहुंची तो लोगों की भीड़ जुट गई। हर कोई अधिकारियों से यही जानने की कोशिश में जुटा रहा कि कितने मीटर तक उनकी दुकान या मकान पर निशान लगाया जाएगा। पूर्व में तैयार विरासत गलियारा के डीपीआर के मुताबिक, सड़क की चौड़ाई 16.50 मीटर तय की गई थी, लेकिन स्थानीय व्यापारी इस निर्माण को 12.50 मीटर तक करने की बात कह रहे हैं। उनका दावा है कि उन लोगों ने सीएम से मिलकर अपनी बात रखी तो राहत मिली।

धर्मशाला बाजार से घंटाघर होते हुए पांडेयहाता तक बनने वाले विरासत गलियारा में पीडब्ल्यूडी की ओर से मकानों और दुकानों पर निशान लगाया जा रहा है। बुधवार को अभियान चलाकर टीम ने हजारीपुर से अलीनगर रोड पर निशान लगाया।

इस दौरान कितने मीटर तक दुकान और मकानों को तोड़ा जाएगा, इस सवाल का जवाब जानने की कोशिश में लोग लगे रहे। हालांकि निशान लगा रही टीम सही जवाब नहीं दे पा रही थी। उनका कहना था कि वह सड़क के बीच से दोनों तरफ सवा छह–सवा छह मीटर पर मकानों पर निशान लगा रहें हैं।

पीडब्ल्यूडी ने शहर के भीतर विरासत गलियारा बनाने के लिए कार्यवाही जारी रखा है। शासन से बजट मिलने के बाद अधिकारियों ने अधिग्रहित किए जाने वाले मकानों, दुकानों और जमीनों पर निशान लगाने की प्रक्रिया शुरू करा दी है। जब टीम हजारीपुर पहुंची तो लोगों की भीड़ जुट गई। हर कोई अधिकारियों से यही जानने की कोशिश में जुटा रहा कि कितने मीटर तक उनकी दुकान या मकान पर निशान लगाया जाएगा। पूर्व में तैयार डीपीआर के मुताबिक सड़क की चौड़ाई 16.50 मीटर तय की गई थी, लेकिन स्थानीय व्यापारी इस निर्माण को 12.50 मीटर तक करने की बात कह रहे हैं। उनका दावा है कि उन लोगों ने सीएम से मिलकर अपनी बात रखी तो राहत मिली।

हालांकि इस संबंध में पीडब्ल्यूडी के अधिकारी कोई भी जानकारी देने से बच रहे हैं। उनका कहना है कि वह दोनों चौड़ाई पर सर्वे तैयार कर शासन को भेज देंगे। शासन से जो निर्देश होगा उसपर काम शुरू कराया जाएगा। पीडब्ल्यूडी द्वारा सही जवाब नहीं देने से इससे प्रभावित लोगों में बेचैनी बढ़ती जा रही है।

फिर शर्मसार हुई मां की ममता

नवजात बच्चे के शव को नोच रहे थे कुत्ते, सड़क किनारे पड़ा मिला, इलाके में सनसनी

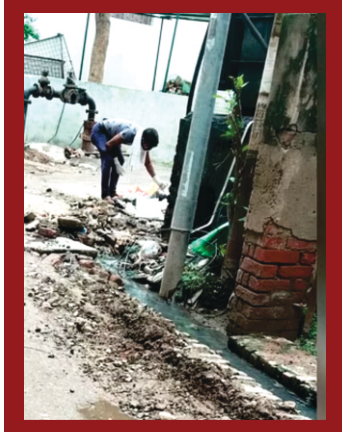

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर कोतवाली थानाक्षेत्र के बक्शीपुर में बुधवार सुबह सड़क किनारे सुबह नवजात शिशु मिला। मुफ्तीपुर मोहल्ले में सड़क किनारे ट्रांसफार्मर किनारे शव को कुत्ते नोच रहे थे। गोरखपुर कोतवाली थानाक्षेत्र के बक्शीपुर में बुधवार सुबह सड़क किनारे सुबह नवजात शिशु मिला। मुफ्तीपुर मोहल्ले में सड़क किनारे ट्रांसफार्मर किनारे शव को कुत्ते नोच रहे थे। स्थानीय लोगों की सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची।

पुलिस नवजात के शव को कब्जे में लेकर जांच कर रही है। पहली बार ऐसा मामला सामने आया है कि सड़क किनारे नवजात शिशु को किसी ने फेंक दिया हो। स्थानीय लोगों के बताया कि नवजात बालक का शव था।

गंदा है पर धंधा है

गोरखपुर में दवाएं ब्रांडेड हों या जेनेरिक, पब्लिक की जेबें कटेंगी– धंधेबाजों की भरेंगी

गोरखपुर में धंधेबाज, जेनेरिक को ही ब्रांडेड बताकर मरीजों को ऊंचे दाम पर बेच दे रहे हैं

गोरखपुर,संवाददाता। बड़ी कंपनियों ने अपने ब्रांड नाम से मिलती–जुलती सस्ती जेनेरिक दवाएं बाजार में उतारीं तो मकसद था मरीजों को सस्ता बेचना। लेकिन इनकी अच्छी पैकिंग और उस पर लिखे एमआरपी ने धंधेबाजों को एक और अवसर दे दिया। वे इन जेनेरिक दवाइयों को भी ब्रांडेड का स्थानापन्न (सब्स्टीट्यूट) बताकर महंगे दाम पर बेच रहे हैं। ग्राहकों को 30 प्रतिशत छूट का लाभ देकर इस तरह की दवाओं को आराम से ग्रामीण बाजार में बेच दिया जा रहा है।

दवा के बाजार में एक से बड़े एक खेल हो रहे हैं। सरकार ने सस्ते दाम पर दवाएं उपलब्ध कराने की पहल की तो बड़ी कंपनियों ने ब्रांडेड के साथ ही जेनेरिक दवाएं भी बाजार में उतार दीं, लेकिन इसका फायदा मरीजों को कम धंधेबाजों को ज्यादा हो रहा है। धंधेबाज, जेनेरिक को ही ब्रांडेड बताकर मरीजों को ऊंचे दाम पर बेच दे रहे हैं। मिलते–जुलते नाम और निगरानी नहीं होने से धंधेबाज चांदी काट रहे हैं तो मरीज ठगे जा रहे हैं।

बड़ी कंपनियों ने अपने ब्रांड नाम से मिलती–जुलती सस्ती जेनेरिक दवाएं बाजार में उतारीं तो मकसद था मरीजों को सस्ता बेचना। लेकिन इनकी अच्छी पैकिंग और उस पर लिखे एमआरपी ने धंधेबाजों को एक और अवसर दे दिया। वे इन जेनेरिक दवाइयों को भी ब्रांडेड का स्थानापन्न (सब्स्टीट्यूट) बताकर महंगे दाम पर बेच रहे हैं। ग्राहकों को 30 प्रतिशत छूट का लाभ देकर इस तरह की दवाओं को आराम से ग्रामीण बाजार में बेच दिया जा रहा है।

अब मार्केट में सिपला, मैनकाइंड, कैडिला, फाइजर जैसी प्रतिष्ठित दवा कंपनियों ने भी अपनी ब्रांडेड के अलावा जेनेरिक दवाएं भी बाजार में उपलब्ध कराई हैं। इन कंपनियों की जेनेरिक दवाइयों की पैकेजिंग भी ब्रांडेड जैसी ही होती है।

बुखार के सबसे आम दवा पैरासिटामॉल को एक नामी कंपनी ने पैरासिप के नाम से उतारा है। इसी प्रकार एलर्जी की सबसे चर्चित दवा सिट्रीजीन का विकल्प एलर्जीन है। कैल्शियम, विटामिन और डी–3 को मिलाकर बने टेबलेट एमकॉल का विकल्प जेनरिक में जिरकॉल के नाम से है। एक ही ब्रांड की इन दवाइयों की कीमत में जमीन–आसमान का अंतर है। जोड़ों में दर्द से संबंधित एक कंपनी की ब्रांड वाली दवा की 10 टैबलेट का पत्ता जहां 347 रुपये की है, वहीं उसकी जेनेरिक दवा का पत्ता 84 रुपये का है।

हालांकि, दोनों दवाओं की पैकेजिंग एक जैसी ही है। इसलिए दुकानदार अक्सर ही ब्रांडेड का विकल्प बताकर जेनेरिक दवा ही पकड़ा देते हैं। इसमें बड़ा खेल यह है कि जेनेरिक दवाइयों पर जो एमआरपी दर्ज है, उस पर 40 प्रतिशत से अधिक कमीशन है। इसीलिए दुकानदार ब्रांडेड के नाम पर जेनेरिक माल बेच देते हैं। इस तरह का खेल शहर की अपेक्षा ग्रामीण क्षेत्र के बाजार में अधिक हो रहा है, क्योंकि वहां ब्रांड को लेकर अधिक दबाव नहीं रहता।

पेटेंट से बाहर होने पर दूसरे भी कर लेते हैं फार्मूले का इस्तेमाल

जब किसी बीमारी के इलाज के लिए नई दवा इजाद की जाती है तो उसका पेटेंट होता है, जो आमतौर पर 20 साल के लिए होता है। उस अवधि में दवा के सॉल्ट का प्रयोग दूसरा कोई नहीं कर सकता। जो कंपनी इस साल्ट के आधार पर दवा का उत्पादन करती है, वह रिसर्च से लेकर दवा वितरण तक के खर्च को लागत मूल्य में जोड़ देती है, जिससे उस दवा की कीमत बहुत अधिक हो जाती है। 20 साल बाद जब पेटेंट खत्म होता है तो वह साल्ट अन्य सभी कंपनियों के लिए भी उपलब्ध होता है। उन साल्ट के आधार पर जो दवाइयां बनती हैं, उन्हें अलग–अलग नाम से बाजार में बेचा जाता है। इसमें जो दवा केवल साल्ट के नाम पर बाजार में उतरती है, उसे जेनेरिक कहते हैं। ब्रांडेड व जेनेरिक दवा की कीमत में जमीन–आसमान का अंतर होता है। कीमत में कमी के कारण ही लोग अब जेनेरिक दवाओं पर अधिक जोर दे रहे हैं।

ड्रग इंस्पेक्टर राहुल कुमार ने बताया कि अभी हमारे पास इस तरह की कोई शिकायत नहीं मिली है। जेनेरिक दवाइयों का कारोबार लगातार बढ़ रहा है। अगर कोई जेनेरिक दवा को ही ब्रांडेड बताकर बेच रहा है तो यह गलत है। ऐसी शिकायतों की जांच कराई जाएगी। मरीजों व उनके तीमारदार को दवा खरीदते समय मैनुफैक्चर करने वाली कंपनी का नाम, पता, एक्सपायरी डेट, साल्ट आदि भी देखना चाहिए। हम लोग लगातार अभियान चलाकर दुकानों की जांच कर रहे हैं। अगली जांच में इस पर भी निगरानी करेंगे।

स्कूल में छात्र की अंगुली कटी

शिक्षक ने फेंकवाया– पिता ने दी तहरीर

देवरिया। शहर के सदर कोतवाली क्षेत्र के सीसी रोड निवासी संजय कुमार तिवारी का बेटा वासु तिवारी एक विद्यालय में कक्षा छह का छात्र है। 3 अगस्त को उनका बेटा स्कूल गया था। लंच के दौरान वासु अपने कक्षा के बाहर लिखे हुए बोर्ड को दाहिने हाथ से छूने की कोशिश कर रहा था और बायां दरवाजे की तरफ था। उसी दौरान तेज़ हवा के चलते लोहे का दरवाजा तेज़ी से बंद हो गया और वासु की अनामिका उंगली दब कर कट गई।

देवरिया शहर के स्कूल में पढ़ने गए एक छात्र की अंगुली कट गई। छात्र के पिता का आरोप है कि मामले में घोर संवेदनहीनता बरतते हुए एक शिक्षक ने कटी हुई अंगुली को कूड़े में फेंकवा दिया। स्कूल और शिक्षक की इस लापरवाही के चलते अब छात्र को दिव्यांग होना पड़ा। छात्र के पिता ने तहरीर देकर मामले में आरोपी शिक्षक के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

शहर के सदर कोतवाली क्षेत्र के सीसी रोड निवासी संजय कुमार तिवारी का बेटा वासु तिवारी एक विद्यालय में कक्षा छह का छात्र है। 3 अगस्त को उनका बेटा स्कूल गया था। लंच के दौरान वासु अपने कक्षा के बाहर लिखे हुए बोर्ड को दाहिने हाथ से छूने की कोशिश कर रहा था और बायां दरवाजे की तरफ था। उसी दौरान तेज़ हवा के चलते लोहे का दरवाजा तेज़ी से बंद हो गया और वासु की अनामिका उंगली दब कर कट गई। छात्रों के शोर मचाने पर स्कूल के शिक्षक मौके पर पहुंचे। शिक्षकों ने स्कूल में ही प्राथमिक उपचार किया। इस दौरान छात्र की उंगली कट कर अलग हो गई थी।

आरोप है कि एक शिक्षक ने उसे स्कूल के समीप एक ट्रांसफार्मर के पास कूड़े में फेंकवा दिया। शिक्षकों ने इसके बारे में परिजनों को सूचना तक नहीं दी। इसके बारे में परिजनों को जानकारी हुई तो वह छात्र को इमरजेंसी लेकर पहुंचे। इमरजेंसी में पहुंचने पर इलाज शुरू हुआ।

परिजनों के लगभग 3 घंटे बाद खोजने के दौरान छात्र की कटी हुई अंगुली ट्रांसफॉर्मर के पास मिली। परिजन उसे लेकर चिकित्सक पास गए तो उसने देरी हो जाने के कारण संक्रमण का खतरा बता जोड़ने से इंकार कर दिया। परिजनों ने मामले की शिकायत प्रधानाचार्य से की।

लेकिन आरोपी शिक्षक के विरुद्ध कोई कार्रवाई नहीं हुई। संजय तिवारी ने इसकी तहरीर पुलिस अधीक्षक को देकर आरोपी शिक्षक के खिलाफ मुकदमा दर्ज करने की मांग की है।

इस संबंध में बीएसए शालिनी श्रीवास्तव ने बताया कि एक छात्र की उंगली कट गई थी। घटना की जानकारी मिलने पर खण्ड शिक्षा अधिकारी को जांच के लिए भेजा गया था। जांच के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। जबकि विद्यालय के प्रधानाचार्य ने कहा कि पीड़ित के पिता का आरोप बेबुनियाद है। जैसे ही घटना हुई बच्चे को तत्काल अस्पताल ले जाकर इलाज कराया गया।

सिकरीगंज हत्याकांड: शव रखकर तीन घंटे प्रदर्शन

एनकाउंटर पर अड़े– शाम को मानें, सुबह फिर चौराहे पर रख दिया शव

गोरखपुर। अहिरौली खुर्द में सोमवार को आदेश चौधरी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। मंगलवार शाम छह बजे पोस्टमार्टम के बाद जब शव पहुंचा तो परिजन और ग्रामीण हंगामा करने लगे। किसी तरह परिजनों को समझाकर प्रशासन ने घर वापस भेजा। बुधवार सुबह फिर परिजनों व ग्रामीणों ने आरोपियों के एंकाउंटर की मांग को लेकर शव सड़क पर रखकर प्रदर्शन शुरू कर दिया। सिकरीगंज (गोरखपुर)। अहिरौली खुर्द में सोमवार को आदेश चौधरी की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। बुधवार सुबह परिजनों ने फिर ढेबरा बाजार में शव रखकर गोरखपुर–सिकरीगंज मार्ग जाम कर दिया। एक घंटे जाम के बाद एसपी और एसडीएम ने समझा कर दाह संस्कार के लिए भेजा शव। पुलिस की मौजूदगी में सिकरीगंज घाट पर अंतिम संस्कार हो रहा है। इसके पहले, मंगलवार शाम छह बजे पोस्टमार्टम के बाद जब शव पहुंचा तो परिजन और ग्रामीण हंगामा करने लगे। पुलिस प्रशासन के खिलाफ नारेबाजी करते हुए शव लेकर सड़क जाम करने निकल पड़े। लोग आरोपियों के एनकाउंटर की मांग कर रहे थे। रास्ते में एसडीएम खजनी और एसपी दक्षिणी ने भीड़ को रोककर समझाया और मांग मानने के लिए पत्र पर हस्ताक्षर किए, तब जाकर परिजन रात करीब 8:45 बजे लौटे। करीब तीन घंटे तक गांव में हंगामा चला। अब बुधवार को शव का अंतिम संस्कार किया जाएगा। एहतियात के तौर पर गांव में पुलिस फोर्स भी तैनात कर दी गई है। इस मामले में पुलिस ने आदेश के चाचा विनोद चौधरी की तहरीर पर मंगलवार को अहिरौली खुर्द निवासी बृजेश तिवारी उर्फ जगरनाथ तिवारी, आदित्य त्रिपाठी उर्फ अनुराग तिवारी, गोलू तिवारी, दुर्गेश सिंह समेत तीन अज्ञात पर हत्या का केस दर्ज किया है। बता दें कि अहिरौली खुर्द में चार साल पहले आरोपी और पीड़ित पक्ष के बच्चों के बीच गांव में ही क्रिकेट खेलने के दौरान विवाद हो गया था। तब विनोद ने बच्चों को डांटकर भगा दिया था। तभी से दोनों पक्षों में रंजिश चल रही थी।

सोमवार की शाम विनोद चौधरी बारीपुर चौराहे पर किसी काम से गए थे। वहां बृजेश और आदित्य 8–10 लड़कों के साथ मिल गए और उन्हें मारपीट कर घायल कर दिया। विनोद ने इसकी शिकायत थाने पर प्रार्थना पत्र देकर की, लेकिन पुलिस ने उसे गंभीरता से नहीं लिया।

अभी वह वापस ही आ रहे थे, तभी गांव में संतोष तिवारी के घर से हरि कीर्तन भोज कार्यक्रम से निकलते समय आदेश चौधरी पर बृजेश और आदित्य ने हमला बोला दिया। पहले आदेश पर हॉकी–डंडे से हमला किया, जब वह नीचे गिर गया तब आरोपियों ने गोलियां बरसा दीं। गोली उसके हाथ और पैर पर लगी थी। पुलिस की मदद से उसे जिला अस्पताल पहुंचाया गया, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। परिजनों ने पुलिस की लापरवाही को लेकर जिला अस्पताल में हंगामा भी किया था।

एसएसपी गौरव ग्रोवर ने भी मृतक के परिजनों को बुलाकर उमकी बात सुनी। जल्द ही अपराधियों की गिरफ्तारी का भरोसा दिलाया। आश्वासन दिया कि पुलिस पूरी तरह से पीड़ित परिवार के साथ खड़ी है। एसपी दक्षिणी जितेंद्र कुमार ने बताया कि आरोपियों की धरपकड़ चल रही है। गिरफ्तारी के लिए तीन टीमें लगाई गई हैं। मंगलवार को एक आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ की जा रही है। परिजनों को समझा दिया गया है। बुधवार को दाह संस्कार होगा। गांव में पुलिस फोर्स तैनात कर दी गई है।

शहर के व्यापारी के नाम से असम में 4.20 लाख का ले लिया फर्जी लोन, ऐसे हुई जानकारी

गोरखपुर,संवाददाता। गोरखपुर के व्यापारी के नाम से असम के गुवाहाटी में फर्जी लोन का मामला प्रकाश में आया है। व्यापारी को जब खुद लोन की जरूरत पड़ी तो बैंक पहुंचे। वहां सिविल स्कोर चेक करने के दौरान पता चला कि उनके नाम से 4.20 लाख रुपये का पर्सनल लोन लिया गया है। गोरखपुर के व्यापारी के नाम से असम के गुवाहाटी में फर्जी लोन का मामला प्रकाश में आया है। व्यापारी को जब खुद लोन की जरूरत पड़ी तो बैंक पहुंचे। वहां सिविल स्कोर चेक करने के दौरान पता चला कि उनके नाम से 4.20 लाख रुपये का पर्सनल लोन लिया गया है। लोन में उनके पैन कार्ड का इस्तेमाल किया गया है। व्यापारी का दावा है कि वह कभी असम गया ही नहीं, वहां के बैंक से लोन कहां से कराएगा। व्यापारी की तहरीर पर खोराबार पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। खोराबार उर्फ सुबाबाजार निवासी सुनील सिंह ने बताया कि वह निजी व्यवसाय करते हैं। उनको एक निजी वाहन लेने के संबंध में लोन कराने की आवश्यकता पड़ी तो दो अगस्त 2024 को बैंक में जाकर अपना लोन कराने की प्रक्रिया शुरू की। इस बीच सिविल स्कोर से जानकारी हुई कि उनके पैन कार्ड और आधार का दुरुपयोग करके एसबैंक गुवाहाटी आसाम में एक फर्जी खाता उनके नाम से खोलकर उसमें 4,20,000 रुपया का फर्जी तरीके से पर्सनल लोन पास करा लिया गया है। लोन कराने वाले ने बैंक की एक भी किस्त जमा नहीं की है। इससे सिविल काफी खराब हो गया है। उन्होंने इसकी शिकायत बैंक से लेकर पुलिस तक से की। बताया कि उनका आसाम में व्यापार तो दूर वहां कभी आना–जाना भी नहीं हुआ है। सुनील की तहरीर पर पुलिस ने केस दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

केंद्रीय जल आयोग के मध्य गंगा खंड कार्यालय के अनुसार राजघाट पर गंगा का जलस्तर बुधवार की सुबह 68.02 मीटर पर पहुंच गया था यानी मंगलवार की शाम चार बजे के बाद से 12 घंटों में 1.12 मीटर की वृद्धि हो चुकी थी। सुबह आठ बजे से शाम के छह बजे तक 10 घंटों में जलस्तर में 66 सेमी की वृद्धि हुई और यह 68.68 मीटर पर पहुंच गया।

उफान पर गंगा

नावों के बाद अब क्रूज का संचालन भी बंद, एनडीआरएफ अलर्ट मोड पर, तटवासियों में अफरातफरी
सभी घाट डूबे, मणिकर्णिका की छत तो हरिश्चंद्र की गली के मुहाने पर हो रहा शवदाह
सुबह–ए–बनारस के मंच, शीतला माता मंदिर, नमो घाट के स्कल्पचर पानी में डूबे

सारनाथ के बाढ़ प्रभावित इलाकों में बिजली कटी, घरों में आठ फीट तक पानी

संवाददाता, वाराणसी। चहुंओर हो रही अच्छी वर्षा से गंगा में उफान के साथ ही अब वरुणा में पलट प्रवाह आरंभ हो गया है। गंगा का पानी वरुण नदी में जाने से सारनाथ के पुलकोहना क्षेत्र में कई घरों में पानी घुस गया है तो शहर के सभी घाट डूब चुके हैं। सुबह–ए–बनारस के मंच, शीतला माता मंदिर, नमो घाट के स्कल्पचर तक पानी लहरा रहा है। गंगा आरती घाटों की छतों पर हो रही है तो महाश्मशान मणिकर्णिका डूबने से शवदाह भी घाट की छत पर किया जा रहा है। वहीं हरिश्चंद्र घाट पर मसान नाथ मंदिर भी पानी में डूब चुका है, वहां शवदाह करने की नौबत अब गली के मुहाने तक आ चुकी है। लहरों में उफान के चलते नावों के बाद बुधवार से क्रूज के संचालन पर भी रोक लगा दी गई है। चिरईगांव के ढाब क्षेत्र में गंगा का पानी खेतों में बोई गई किसानों की सब्जियों की फसल को डुबोने लगा है तो लोग नावों से अब सुरक्षित ठौर की तलाश में निकल पड़े हैं।

मंगलवार की शाम से आठ सेमी प्रति घंटा बढ़ रहा जलस्तर पानी के वरुणा तथा ग्रामीण क्षेत्रों में फैलने से बुधवार की शाम छह बजे तक 6.6 सेमी प्रति घंटा पर आ गया था। जलस्तर में वृद्धि की गति यही रही तो गुरुवार की शाम तक गंगा की लहरें चेतावनी बिंदु को स्पर्श कर सकती हैं। अब यह चेतावनी बिंदु 70.262 मीटर से 1.582 मीटर नीचे रह गया है। पानी बढ़ने की वजह से सभी प्रमुख गंगा घाटों का आपस में संपर्क खत्म हो चुका है। गंगा का जल स्तर बढ़ने से वरुणा में जल का पलट प्रवाह हुआ और वरुणा भी उफान पर आ गई। क्षेत्र के सलारपुर पुलकोहना रेलवे लाइन के किनारे चमेला बस्ती के शरद विश्वकर्मा, राजकुमार सिंह, विजयी यादव, सुभाष गुप्ता, राजेश चौरसिया के मकानों में मंगलवार की रात में अचानक पानी घुसना शुरू हो गया। सुबह होते–होते कमरों में लगभग आठ फीट तक पानी भर गया। ये लोग अपना सामान लेकर किराए के मकान में शरण लिए हैं। बाढ़ प्रभावित इलाकों में बिजली काट दी गई है।

ढाबवासी तलाश रहे सुरक्षित ठौर

गंगा में बाढ़ का पानी तलहटी से ऊपर उठकर किनारे बोई गई सब्जियों फसलों को डुबोने लगा है। बाढ़ की आशंका से तटीय गावों के किसानों, पशुपालकों में दहशत व्याप्त है। लोग सुरक्षित ठिकानों की तलाश में जुट गए हैं। ढाब मोकलपुर अंबा, ढाब सोता पार करने के लिए लोग निजी नावों का सहारा ले रहे हैं। सरकारी राहत की शुरुआत अभी बाढ़ के पानी को चेतावनी बिंदु पार करने के इंतजार में ठंडे बस्ते में है। कागजी तौर पर बाढ़ चौकी स्थापित कर उस पर राजस्व विभाग, स्वास्थ्य विभाग, पंचायत विभाग और पशुपालन विभाग के अधिकारियों कर्मचारियों की तैनाती कर दी गई है। प्रभारी चिकित्साधिकारी चिरईगांव डा. अमित कुमार सिंह ने बताया कि क्लोरीन, ओआरएस, जिंक की गोली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है। राजस्व विभाग की ओर से बाढ़ चौकियों को सक्रिय करने की सूचना मिलते ही स्वास्थ्य विभाग के डाक्टर व अन्य स्वास्थ्य कर्मी तैनात रहेगें। वहीं ढाब क्षेत्र के मोकलपुर गांव के ग्रामप्रधान ने बाढ़ की विभीषिका आरंभ होने के पूर्व ही प्रशासन से पर्याप्त मात्रा में भूसा उपलब्ध कराने की मांग की है।

डेंगू व चिकनगुनिया की जांच की कीमतें तय

लखनऊ [redacted] वारिश के वाद वायरल फीवर के अलावा डेंगू और चिकनगुनिया का खतरा काफी वढ़ गया है। डेंगू और चिकनगुनिया की जांच के नाम पर लूट-खसोट रोकने के लिए स्वास्थ्य विभाग के अफसरों ने निजी पैथोलॉजी में जांच की कीमतें तय कर दी है। प्लेटलेट्स जांच की कीमत भी निश्चित कर दी गई है। तीमारदारों को लैव और मरीज के घर से नमूना एकत्र करने के एवज में अलग-अलग शुल्क चुकाना होगा।

मुख्य चिकित्साधिकारी डा. मनोज अग्रवाल ने वताया कि सरकारी अस्पतालों में डेंगू और चिकनगुनिया की सभी जांचें और भर्ती होने वाले मरीजों का इलाज भी मुफ्त है। इसके साथ ही जरूरत पड़ने पर मरीजों को प्लेटलेट्स भी मुफ्त चढ़ायी जाती है। वहीं, निजी पैथोलॉजी और निजी अस्पतालों में जांच की दरें तय कर दी गई है। यदि मरीज

ज्यादा शुल्क लेने पर कार्रवाई

लैव कर्मचारी को घर वुलाकर नमूना देते है, तो उसका अतिरिक्त शुल्क चुकाना होगा।

मुख्य चिकित्साधिकारी डा. मनोज अग्रवाल ने वताया कि वारिश के वाद डेंगू की आशंका वढ़ जाती है, लेकिन जागरूकता से इसको रोका जा सकता है। घर के आसपास जलभराव न होने दें। यदि पानी भरा हो तो उसमें जला मोविल ऑयल या मिट्टी का तेज डाल सकते है। घर के भीतर ज्यादा दिनों तक पानी एकत्र न होने दें। डेंगू मच्छर हमेशा साफ पानी में पनपता है। छत पर गमले, टायर आदि में पानी न भरने दें। मच्छरदानी में सोएं। फुल आस्तीन के कपड़े पहनें। स्कूलों में वच्चों को पूरी आस्तीन के कपड़े पहनाकर भेजें। वुखार आने पर डॉक्टर की सलाह से डेंगू की जांच कराएं।

जांच का शुल्क

- एनएस1 एलाइजा (लैव में) 1200
- एनएस1 एलाइजा (मरीज के घर से) 1300
- कार्ड से जांच 1000
- चिकनगुनिया कार्ड सेजांच 1200
- चिकनगुनिया पीसीआर 1700
- स्क्रव टाइफस एलाइजा (लैव में) 1200
- स्क्रव टाइफस एलाइजा (मरीज के घर से) 1300
- प्लेटलेट्स काउंट (लैव में) 100
- प्लेटलेट्स काउंट (मरीज के घर से) 200
- एक यूनिट प्लेटलेट्स आरडीपी 400

काकोरी स्मारक पर 9 से मेले का आयोजन : डीएम

लखनऊ। जिलाधिकारी सूर्यपाल गंगवार ने 9 अगस्त को काकोरी एक्शन की 100वीं वर्षगांठ पर होने वाले आयोजन की तैयारियों की कलेक्ट्रेट सभागार में समीक्षा वैठक ली। उन्होने वताया कि मुख्यमंत्री के निर्देशानुसार स्वतंत्रता दिवस के कार्यक्रमों का आयोजन भव्यता से किया जाए। स्मारक स्थल पर 9 से 15 अगस्त तक मेले का आयोजन होगा। जिसमे ओडीओपी के स्टाल, स्वयं सहायता समूह और खादी ग्रामोद्योग के स्टाल, फूड स्टॉल, सरकार की कल्याणकारी योजनाओं के स्टाल, वच्चो के लिए झूले आदि की व्यवस्था की जायेगी। उन्होने कहा सायकाल में देशभक्ति की फिल्मों का प्रसारण होगा। साथ ही प्रतिदिन एक कार्यक्रम का आयोजन जैसे कवि सम्मेलन, भजन संध्या, किस्सा गोई, संगीत संध्या दिवस वार योजना वनाकर आयोजन कराया जाए। वैठक में सीडीओ अजय जैन, समस्त खंड विकास अधिकारी, जिला विकास अधिकारी, जिला पंचायतीराज अधिकारी, पी ओ डूडा, डीसीडीआईसी मनोज चौरसिया सहित अन्य विभागों के अधिकारियों द्वारा प्रतिभाग किया गया।

पुण्यतिथि पर याद किये गये रवीन्द्र नाथ टैगोर

लखनऊ। राजधानी के वंगीय नागरिक समाज ने गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर को उनकी 83वीं पुण्य तिथि पर हिंदी संस्थान से सटे एमजी मार्ग स्थित रवीन्द्र उपवन में वंगीय नागरिक समाज

के मुख्य संयोजक पीके दत्ता के तत्वावधान में श्रद्धांजलि अर्पित की गई। वहीं वंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय द्वारा रचित गीत वंदे मातरम के गायन के साथ रवीन्द्र नाथ ठाकुर की मूर्ति पर माल्यार्पण किया गया उनके नाम पर एक फूल का पौधारोपण भी किया गया। गुरूदेव के नाम पर एक कवि गोष्ठी हुयी। जिसमें प्रख्यात कवि जैसे शिव मंगल सिंह डॉ शरद पांडे शशांक महेश चंद्र गुप्ता मनमोहन वरकोटी राम राज भारती पंडित वेअदव लखनवी कृष्णा नंद मुकेश नंद नंदलाल शर्मा चंचल पीके शुक्ला ,गोवर गणेश, डॉ निशा सिंह नवल, डॉ अलका अस्थाना , भारती पायल सुनीता चतुर्वेदी अजिता गुप्ता , कुलदीप शुक्ला अनिल अनाड़ी ने प्रतिभाग किया।

गुरुदेव की प्रतिमा पर अर्पित किए श्रद्धासुमन

लखनऊ। सावन मास की 22वी तिथि वंग प्रणेता गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की पुण्यतिथि पर वंगाली क्लव व युवक समिति के पदाधिकारियों ने गुरुदेव की प्रतिमा पर पुष्पांजलि के साथ

श्रद्धासुमन अर्पित किया। इस अवसर पर श्रीमती ऐनक्षी सिन्हा एवं संदीप वोस ने गुरुदेव के कार्यो पर प्रकाश डाला । सोशल मीडिया द्वारा प्राप्त समाचारो द्वारा वांग्लादेश में गुरुदेव की मूर्ति तोड़े जाने की भर्त्सना करते हुए सभी पदाधिकारियों ने इसकी घोर निंदा किया। इस अवसर पर अध्यक्ष अरुण कुमार वनर्जी, उपाध्यक्ष श्रीमती ऐनक्षी सिन्हा, सचिव शंकर भौमिक, कोषाध्यक्ष देव भट्टाचार्य, सांस्कृतिक सचिव मनोज वनर्जी मौजूद रहे।

बुद्धेश्वर पहुंची कांवड़ यात्रा किया जलाभिषेक

लखनऊ। वैदेही सेना की लखनऊ की सवसे विशाल कावड़ यात्रा 4 अगस्त को विठूर से प्रस्थान करने के वाद वुधवार को वावा वुद्धेश्वर में जलाभिषेक किया। करीव दो हजार कावड़ यात्रा में सभी शिव भक्त एक ही ड्रेस में वोल वम वम के जयकारे लगा रहे थे। यात्रा का पुलिस प्रशासन एवं उन्नाव हसनगंज जिला प्रशासन द्वारा कांवड़ियों पर

पुष्प वर्षा व अध्यक्ष व अन्य पदाधिकारियों का सम्मान किया। यात्रा में वैदेही सेना के अध्यन अनमोल द्विवेदी, उपाध्यक्षा मीरा मौर्या, प्रवन्धक जनार्दन रस्तोगी, कोषाध्यक्ष राम किशार गुप्ता, अवधेश श्रीवास्तव, राजेन्द्रसिंह, भारत जी, अभिषेक मिश्रा, सौरभ शर्मा मौजूद रहे।

बलरामपुर अस्पताल को मिली पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट मशीन

लखनऊ। वलरामपुर चिकित्सालय को उन्नत स्पाइरोमीटर या पल्मोनरी फंक्शन टेस्ट मशीन दान में मिली है, इससे सांस के मरीजों के उपचार में सहूलियत होगी। इंडियन वैंक ने सीएसआर फंड के अंतर्गत यह मशीन दी गयी है। वैंक के कार्यकारी निदेशक वृजेश कुमार सिंह ने सीएसआर फंड की उपयोगिता और योजनाओं के वारे में विस्तार से वताया। अस्पताल के निदेशक डॉ. पवन कुमार ने वताया कि यह मशीन मरीजों के लिए फायदेमंद सावित होगा। टीवी एवं चेस्ट रोग विशेषज्ञ डॉ. एके गुप्ता ने स्पाइरोमीटर से सांस संवंधी वीमारियों के निदान में मदद मिलेगी। इस मौके पर वैंक के महाप्रवंधक सुधीर कुमार गुप्ता, प्राणेश कुमार और मुख्य चिकित्सा अधीक्षक डॉ. एनवी सिंह, चिकित्सा अधीक्षक डॉ. हिमांशु चतुर्वेदी भी मौजूद थे।

संविदाकर्मी ने किया एनएचएम कार्यालय का घेराव

लखनऊ। उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन संविदा कर्मचारी संघ ने वुधवार को एनएचएम कार्यालय का घेराव करके अपनी मांगों के लिए आवाज वुलंद की। कर्मचरियों का कहना था कि उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन संविदा कर्मचारी संघ की तरफ से 15 सूत्रीय मांग को लेकर लंवे समय से संघर्ष किया जा रहा है। संघ के वैनर तले 26 जुलाई से स्वास्थ्य संविदा कर्मचारी समय-समय पर मांगों को लेकर अपना विरोध जता रहे है, लेकिन उसके वाद भी कई मांगें ऐसी है,जिसको लेकर कोई सुनवाई नहीं हो रही है। इसके कारण उत्तर प्रदेश राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन संविदा कर्मचारी संघ ने लखनऊ स्थित एनएचएम कार्यालय पर पहुंचकर संविदाकर्मियों ने प्रदर्शन कर अपनी मांग रखीं।

जीवन में हैं राम तो कष्ट संभव नहीं : शंकरदास

लखनऊ। जैसे सूर्य के सामने अंधकार नहीं आ सकता वैसे ही किसी के जीवन में राम है तो उसके जीवन में कष्ट नहीं आ सकता। यह वात चंद्रलोक कालोनी स्थित चंद्रेश्वर मंदिर में चल रही श्रीराम कथा के तीसरे दिन शंकरदास ने कही। उन्होंने कहा कि राम सच्चिदानंद है। यदि आनंद ही आनंद चाहिए तो राम को अपने जीवन में ले आओ। शंकर दास ने प्रभु राम के प्राकट्य का गुणगान करते हुए कहा कि जव प्रभु राम का प्राकट्य हुआ तो सारे संसार में आनंद छा गया। यदि किसी के जीवन में राम का प्राकट्य होता है उसके जीवन में आनंद छा जाता है। आज कल आनंद की गलत परिभाषा हो गई है। आनंद का मतलव धन संपत्ति नहीं है। धन संपत्ति का कोई अंत नहीं है। वड़े वड़े धन संपत्ति वाले नीद के लिए दवा ले रहे है। उन्होंने कहा जव जीवन में प्रभु आ जाते है तो धन संपत्ति से मोह भंग हो जाता है।माया में मोह होने का मतलव अभी प्रभु हमसे दूर है।

श्रीराम कथा

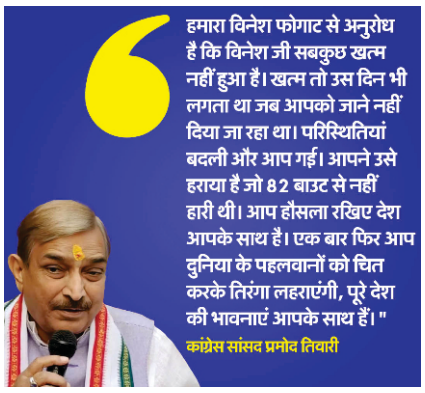

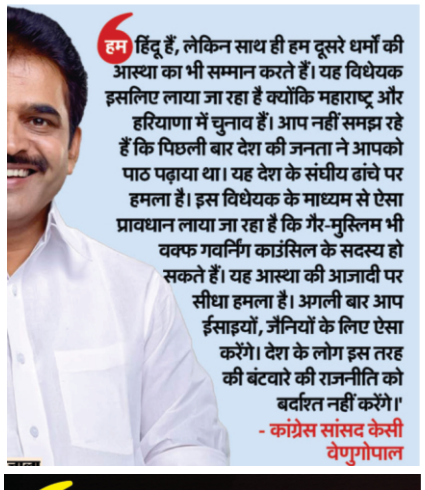

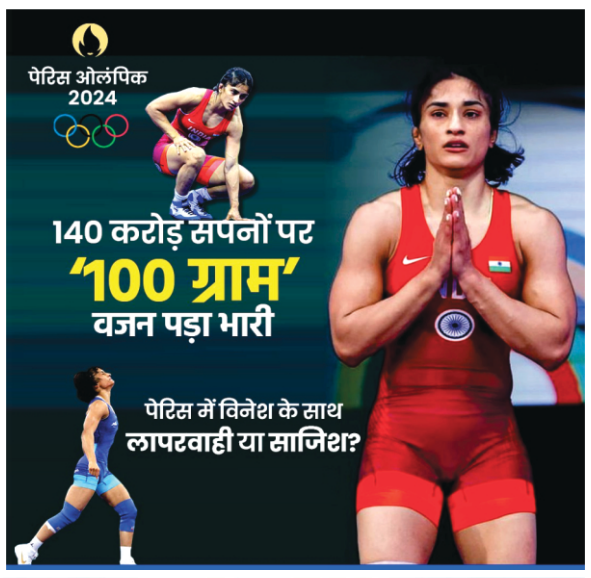

बरेली,संवाददाता। पति की खोपड़ी को फोड़ने के बाद दो भागों में बांटकर पत्नी दस मिनट तक हाथ डालकर अंदर से नसें आदि निकालकर फेंकती रही। वीभत्स घटना को देखकर लोग कांप गए। उसके पास जाने की हिम्मत भी नहीं जुटा सके। उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर के रोजा में पति की हत्या के बाद पत्नी ने 10 मिनट तक जो बर्बरता की उसे देखकर हर कोई कांप गया। लोग इस कदर भयभीत थे कि जैसे वो एक जगह जम से गए हों। डर के मारे कोई भी एक कदम आगे नहीं बढ़ा पा रहा था। महिला अपने पति की खोपड़ी को फोड़ने के बाद दो भागों में बांटकर दस मिनट तक हाथ डालकर अंदर से नसें और मांसे के टुकड़े आदि निकालकर फेंकती रही। वीभत्स घटना को देखकर लोग कांप गए। उसके पास जाने की हिम्मत भी नहीं जुटा सके।

दस मिनट तक करती रही बर्बरता

पति की खोपड़ी को फोड़ने के बाद दो भागों में बांटकर पत्नी दस मिनट तक हाथ डालकर अंदर से नसें आदि निकालकर फेंकती रही। वीभत्स घटना को देखकर लोग कांप गए। उसके पास जाने की हिम्मत भी नहीं जुटा सके। गुरुवार को करीब दो बजे सत्यपाल समोसे लेकर अपने घर गया था। अंदर जाने पर गायत्री ने कुछ कह दिया। दोनों में विवाद होने के बाद सत्यपाल ने डंडा मार दिया। डंडा लगते ही गायत्री भड़क गई। उसने अलमारी में रखे हंसिया को उठाया और मारने के लिए झपट पड़ी।

पुलिस से पत्नी बोली– भैया... इसे जलवा देना, ठीक है

पति की फटी खोपड़ी में हाथ डालते हुए पत्नी गायत्री थाना प्रभारी रोहित सिंह को देखकर बोली, भैया... इसे जलवा देना, ठीक है। इसके बाद मुझे भी जलवा देना। इसके बाद रोहित ने तुरंत ही अधिकारियों को सूचना देने के बाद रोजा इंस्पेक्टर राजीव वर्मा को फोन किया। रोजा पुलिस ने आरोपी महिला को हिरासत में ले लिया। पुलिस की गिरफ्त में उसके चेहरे पर पछतावे के कोई भाव नहीं थे।

पत्नी का क्रोध देख दहशत में आ गया था पति

दहशत में आए सत्यपाल ने बाहर की ओर दौड़ लगा दी। गैलरी में पत्नी ने उसे धक्का देकर गिरा दिया। छीना–झपटी में उसके हाथ से हंसिया छिटक गया। दंपती में विवाद होने पर लोगों की भीड़ लग गई। तभी गायत्री ने सत्यपाल के सीने बैठकर वहीं पड़ी ईंट से सिर पर वार कर दिया। एक वार होते ही वह अचेत हो गया। बताते हैं कि दूसरी ईंट से वार करने के बाद सिर फट गया और उसकी मौत हो गई।

वीभत्स घटना देख पुलिस भी सन्न

वारदात के समय वहां से गुजर रहे सेहरामऊ दक्षिणी थाने के प्रभारी रोहित सिंह ने भीड़ लगी देखकर अपनी गाड़ी को रुकवा लिया। उन्होंने वीभत्स घटना देखी तो वह सन्न रह गए। वह महिला के पास गए। उसे रोकने के लिए भीड़ में खड़ी महिलाओं को बुलाया, पर कोई आने को तैयार नहीं हुई। गायत्री को बमुश्किल खुद ही हटाया। वह बोली कि मार दिया, बहुत तंग करता था।

पहले हंसिया लेकर दौड़ाया... फिर ईंट से कुंचकर हत्या की

पत्नी गायत्री से रोजाना ही पति सत्यपाल का विवाद होता था। गुरुवार को जब उसने डंडा मारा तो बौखलाई गायत्री के सिर पर खून सवार हो गया। पहले पति को हंसिया लेकर दौड़ाया। फिर ईंट से कुंचकर हत्या कर दी।

महिला बोली– वह पति से बहुत परेशान थी

हिरासत में लेने के बाद पुलिस की पूछताछ में गायत्री ने बताया कि उसका पति सत्यपाल शराब पीकर अक्सर उसे मारता–पीटता था। कमरे में बंद कर देता था। कभी रुपये भी नहीं देता था। इससे वह बहुत परेशान थी। लगातार मारपीट किए जाने से वह कुंठित हो गई थी। आज मुर्गा खाने के लिए 300 रुपये मांग रहा था। उसके पास रुपये नहीं थे। उसने कहा तो वह नहीं माना। रुपये मांगते हुए पीटने लगा। इसी वजह से उसने हत्या कर दी। पुलिस ने पूछा कि मारने के बाद उसे नोचते क्यों रही तो उसने कहा कि उसके अंदर इतना गुस्सा भर गया था कि उसने ऐसा कृत्य किया।

यह है पूरा मामला

उत्तर प्रदेश के शाहजहांपुर जिले में गुरुवार को यह दिल दहलाने वाली वारदात हुई। विवाद के बाद घर के दरवाजे पर पत्नी ने पति का सिर ईंट से कुचल दिया। सीने पर बैठकर हाथों से सिर फाड़ने के बाद मांस के लोथड़े फेंकने शुरू कर दिए। सूचना पर पहुंची पुलिस ने पत्नी को गिरफ्तार कर लिया है।

रोजा थाना क्षेत्र के हथौड़ा बुजुर्ग में सत्यपाल (40) पत्नी गायत्री देवी, बेटे रोहित, बेटी डॉली के साथ रहते थे। गुरुवार दोपहर करीब ढाई बजे सत्यपाल का किसी बात को लेकर गायत्री से झगड़ा होने लगा। गुस्से में आई गायत्री ने ईंट उठाकर सत्यपाल के सिर पर मारनी शुरू कर दी। वह नीचे गिर गया तो सीने पर बैठकर लगातार ईंट मारती रही। सिर फटने पर हाथ से मांस के लोथड़े फेंकने शुरू कर दिए।

महिला का कृत्य देखकर आसपास के लोग दूर से वीडियो बनाते रहे लेकिन पास जाने की हिम्मत नहीं जुटा पाए। सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और गायत्री को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस उससे पूछताछ कर रही है। एसपी सिटी संजय कुमार ने बताया कि पत्नी को गिरफ्तार कर उससे पूछताछ की जा रही है।

मां ने उठाए सवाल... बोली सबकुछ ठीक करती थी फिर बीमार कैसे

पुलिस की पूछताछ में सत्यपाल की मां शकुंतला ने सवाल उठाया कि अगर गायत्री मानसिक रूप से बीमार थी तो फिर सारे काम ठीक कैसे कर पाती थी? वह केवल ढोंग करती थी। सिर्फ बेटे से झगड़े के समय ही आक्रामक होती थी। मां ने कहा कि गायत्री की मानसिक बीमारी की जांच कराई जानी चाहिए।

आर्थिक तंगी और शराब पीने की आदत से होते थे झगड़े

सत्यपाल शराब पीने का आदी था। वह जो कुछ कमाता था, शराब में उड़ा देता था। वह पत्नी गायत्री को रुपये नहीं देता था। कई बार उसकी मां शकुंतला घर में खाना भेजती थी। दंपती में रोज होने वाले झगड़ों के कारण आसपास के लोग भी परेशान थे। आसपास के कुछ लोगों ने कहा कि अक्सर झगड़ा होने के कारण वे लोग बीच में नहीं पड़ते थे। लेकिन ऐसा कुछ हो जाएगा, इसका अंदाजा भी नहीं था। बच्चे बचपन से ही दादी के पास रह रहे थे। पिता की मौत और मां के जेल जाने से रोहित और दीप्ति काफी गम और दहशत में हैं। वे कुछ बोलने की स्थिति में नहीं थे। भाई अवनीश ने बताया कि पहले भी गायत्री हमला कर चुकी है। एक बार हंसिये से सत्यपाल पर हमला किया था। तब उसने ही बचाया था।

जिसने भी देखा दिल दहलाने वाला दृश्य.. . कांप गया

दोपहर करीब तीन बजे हथौड़ा से रोजा की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग के किनारे बने मकान के सामने का दृश्य जिसने देखा, कांप उठा। सड़क पर हर समय काफी भीड़भाड़ रहती है। मकान के बाहर बने चबूतरे पर सत्यपाल के सीने पर बैठी गायत्री उसके फटे सिर में हाथ डालकर बैठी थी। इस दौरान छुट्टी होने पर कई स्कूली बच्चे भी गुजर रहे थे, वे भी रुककर देखने लगे। आसपास के लोगों ने उन्हें वहां से हटाया। नजारा इतना खौफनाक था कि लोगों की रूह कांप गई। गाड़ियां रोककर लोग सबकुछ देखते रहे लेकिन किसी की हिम्मत नहीं पड़ रही थी कि वह महिला के पास जा सके।

घटना का वीडियो देख दहल गए लोग

पति की हत्या के बाद वीभत्स हत्याकांड का वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा। महिला ने इतनी बेरहमी से पति को मौत के घाट उतारा, जिसे देखकर लोग सहम गए।

ये हैं बांग्लादेश की 5 टाप एक्ट्रेसेस

खूबसूरती के मामले में बालीवुड हसीनाएं भी हैं पीछे

रफियथ रशीद मिथिला रफियथ रशीद मिथिला बांग्लादेश की एक्ट्रेस होने के साथ साथ एक मशहूर सिंगर भी हैं। उनकी फिल्में बांग्लादेश और कोलकाता में खूब चलती हैं। रफियथ रशीद मिथिला ने साल 2006 में अपने एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी। वह अब तक कई सुपरहिट फिल्मों में नजर आ चुकी हैं। विद्या सिन्हा सहा मीम विद्या सिन्हा सहा मीम ने साल 2008 में बांग्लादेश की फिल्मों से एक्टिंग करियर की शुरुआत की थी। वह ब्यूटी पेजेंट लक्स चैनल वन सुपरस्टार 2007 जीत चुकी हैं। एक्ट्रेस अपनी एक्टिंग के साथ–साथ दिलकश अदाओं से भी फैंस का दिल जीतती नजर आती हैं। सादिया जहां प्रोवा ।कअमतजपेमउमदज सादिया जहां प्रोवा बांग्लादेश की एक फेमस एक्ट्रेस हैं। वह अपनी प्रोफेशनल लाइफ के साथ–साथ पर्सनल लाइफ को लेकर भी खबरों में छाई रहती हैं। उन्होंने साल 2010 में एक्टर जिआउल फारूख के साथ शादी की थी। हालांकि ये शादी एक साल भी चल नहीं पाई और साल 2011 में उन्होंने तलाक ले लिया था। इसके बाद उन्होंने 2012 में महमूद से शादी की लेकिन 2014 में उनकी ये शादी भी टूट गई। सादिया जहां प्रोवा फिल्मों के साथ साथ टीवी में भी काम करती हैं।

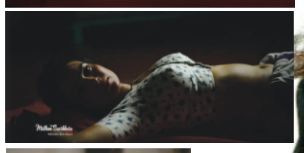

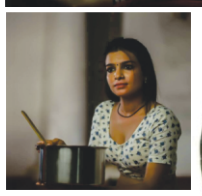

इन दिनों श्रद्धा कपूर अपनी आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'स्त्री 2' को लेकर लगातार सुर्खियों में बनी हुई है। फिल्म के प्रमोशन में लगातार व्यस्त श्रद्धा की कई फिल्में इस साल तो कुछ अगले साल रिलीज होंगी। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार, श्रद्धा की आने वाली फिल्मों में स्त्री 2 के बाद स्त्री 3 से लेकर टाइम ट्रेवल पर आधारित फिल्म शामिल है। यही नहीं बल्कि एक फिल्म में श्रद्धा कपूर नागिन के किरदार में भी नजर आ सकती हैं। सबसे पहले बात करते हैं श्रद्धा की आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्म 'स्त्री 2' की। इस फिल्म में श्रद्धा के अलावा राजकुमार राव, पंकज त्रिपाठी, अभिषेक बनर्जी और अपारशक्ति खुराना मुख्य भूमिकाओं में नजर आएंगे। 'स्त्री 2' अमर कौशिक द्वारा निर्देशित और मैडॉक फिल्म्स और जियो स्टूडियो के बैनर तले दिनेश विजन और ज्योति देशपांडे द्वारा निर्मित है। यह एक हॉरर–कॉमेडी फिल्म है। बता दें यह फिल्म 2018 में आई 'स्त्री' की अगली कड़ी है। यह मैडॉक सुपरनैचुरल यूनिवर्स की पांचवीं किस्त है। फिल्म 15 अगस्त 2024 को सिनेमाघरों में रिलीज के लिए तैयार है।

अवनीत कौर पर लगा धोखाधड़ी का आरोप

मुम्बई,एजेंसी। बॉलीवुड एक्ट्रेस अवनीत कौर इस समय बड़ी मुश्किल में फंस गई हैं। खबर है कि एक ज्वैलरी ब्रांड ने उन पर धोखाधड़ी करने का आरोप लगाया है। ज्वैलरी ब्रांड ने अवनीत द्वारा की गई धोखाधड़ी को लेकर इंस्टाग्राम पर एक लंबा–चौड़ा पोस्ट किया है। ठीवरचनतप थ्पसउेः भोजपुरी सिनेमा की सबसे महंगी 4 फिल्में, देखकर हिल जाएगा माथा ज्वैलरी ब्रांड ने अवनीत कौर पर लगाया आरोप 'रंग' नाम के ज्वैलरी ब्रांड का आरोप है कि अवनीत कौर ने बार–बार वादा करने के बाद भी उन्हें सोशल मीडिया पोस्ट्स में क्रेडिट नहीं दिया है, जो कि उनके कॉन्ट्रैक्ट का अहम हिस्सा था। ब्रांड का आरोप है कि अवनीत कौर ने उनकी ज्वैलरी पहनी, पर बार–बार क्रेडिट को नजरअंदाज करती रहीं। कानूनी मुश्किल में फंस सकती हैं अवनीत ज्वैलरी ब्रांड के अनुसार कॉन्ट्रैक्ट के नियमों का उल्लंघन करने के कारण अवनीत कौर कानूनी मुश्किल में फंस सकती हैं। ब्रांड ने बताया कि अवनीत कौर को उनकी ज्वैलरी पहनकर पोज देते हुए इंस्टाग्राम पर उन्हें टैग करना था, पर एक्ट्रेस ने ऐसा नहीं किया। ब्रांड ने अवनीत कौर के साथ हुई बातचीत के वॉट्सऐप स्क्रीनशॉट भी शेयर किए हैं। बच्चन खानदान की 'बहू' कहे जाने पर ऐश्वर्या राय का बड़ा बयान, सरनेम को लेकर किया चौंकाने वाला खुलासा अवनीत ने ज्वैलरी ब्रांड का कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था ज्वैलरी ब्रांड 'रंग' ने बताया कि अवनीत कौर ने यूरोपियन ट्रिप के दौरान उनके साथ कॉन्ट्रैक्ट साइन किया था। वेकेशन के दौरान ब्रांड ने अवनीत को काफी ज्वैलरी दी थी। अवनीत ने ब्रांड से कहा था कि वह तस्वीरें पोस्ट करते वक्त उन्हें अपने पोस्ट में क्रेडिट देंगी लेकिन बाद में वह अपनी बात से मुकर गईं और ब्रांड को कोई क्रेडिट दिए बिना सोशल मीडिया पर उसकी ज्वैलरी पहनकर पोस्ट करती रहीं। श्रींतींदकः दिल्ली के बाद झारखंड में भारी बारिश का अलर्ट,राज्य में स्कूल 1 दिन के लिए किए गए बंद ज्वैलरी ब्रांड ने पोस्ट में लिखी ऐसी बात ज्वैलरी ब्रांड ने पोस्ट में ये भी बताया है कि अवनीत कौर ने कैसे अन्य लग्जरी ब्रांड्स के कपड़ों के साथ उनकी ज्वैलरी मैच करके पहनी और तस्वीरें पोस्ट कीं। लेकिन उनमें सिर्फ हाई एंड ब्रांड्स को ही टैग किया। जब अवनीत की स्टाइलिस्ट ने उन्हें याद दिलाया कि उन्हें ज्वैलरी के लिए ब्रांड को टैग करना है, तो वह दूसरे पोस्ट में उन्हें क्रेडिट देने के लिए राजी हो गईं लेकिन बाद में भी ऐसा नहीं किया।

रूमर्ड बायफ्रैन्ड संग डिनर डेट पर निकली

तृप्ति डिमरी

पैपराजी के सामने साथ में नहीं दिया पोज

नई दिल्ली। बॉलीवुड एक्ट्रेस तृप्ति डिमरी पिछले कुछ दिनों से अपनी लव लाइफ को लेकर सुर्खियों में छाई हुई हैं. चर्चा है कि वह बिजनेसमैन सैम मर्चेंट को डेट कर रही हैं. बीती रात दोनों डिनर डेट पर गए थे, जहां पर पैपराजी ने उन्हें स्पॉट किया. हालांकि, इस दौरान उन्होंने पैपराजी के सामने साथ में पोज नहीं दिया. तृप्ति डिमरी और सैम मर्चेंट का एक वीडियो इंटरनेट पर जमकर वायरल हो रहा है. वीडियो में देखा जा सकता है कि तृप्ति डिमरी डिनर डेट के बाद रेस्टोरेंट से अकेले बाहर निकलती नजर आ रही हैं. उन्होंने व्हाइट वेस्ट के ऊपर मैचिंग कलर की शर्ट पहनी है, जिसे उन्होंने ग्रीन पैंट्स के साथ पेयर किया है. वह रेस्टोरेंट के सामने अकेले पोज देकर फोटोज क्लिक करवाती हैं।

014 से अंतरराष्ट्रीय स्तर पर शुरू हुआ पदक जीतने का सफर अब तक जारी, ऐसा रहा है नीरज का रिकार्ड

नीरज फाइनल में 89.45 मीटर के अपने सर्वश्रेष्ठ के साथ दूसरे स्थान पर रहे और लगातार दूसरी बार ओलंपिक पदक जीतने में सफल रहे। नीरज इसके साथ ही दो ओलंपिक पदक जीतने वाले आजाद भारत के पहले एथलीट हैं।

पेरिस,एजेंसी। भारत के स्टार भाला फेंक एथलीट नीरज चोपड़ा ने पेरिस ओलंपिक में रजत पदक जीतकर इतिहास रच दिया। नीरज फाइनल में 89.45 मीटर के अपने सर्वश्रेष्ठ के साथ दूसरे स्थान पर रहे और लगातार दूसरी बार ओलंपिक पदक जीतने में सफल रहे। नीरज इसके साथ ही दो ओलंपिक पदक जीतने वाले आजाद भारत के पहले एथलीट हैं। नीरज पिछले कुछ समय से लगातार उपलब्धियां हासिल कर रहे हैं और देश को गौरवान्वित कर रहे हैं। आइए जानते हैं भारत के इस दिग्गज खिलाड़ी का कैसा रहा है सफर।

वजन घटाने के लिए शुरू किया था खेलना

नीरज को शुरुआत से खेलों में ज्यादा रुचि नहीं थी और उनका खिलाड़ी बनना अपने आप में एक दिलचस्प बात है। दरअसल, नीरज का बचपन में वजन ज्यादा था और घरवाले इस बात से परेशान रहते थे। उन्होंने 11 साल की उम्र में नीरज को स्टेडियम भेजना शुरू किया। वहां नीरज की मुलाकात राष्ट्रीय स्तर के भाला फेंक एथलीट जयवीर से हुई जिन्होंने नीरज को भाला फेंकने के लिए कहा। जब नीरज ने थ्रो किया तो जयवीर हैरान रह गए थे। इसके बाद नीरज ने इस खेल में आगे बढ़ने का फैसला किया।

यूथ ओलंपिक में रजत जीतकर की शुरुआत

नीरज चोपड़ा ने 2014 में बैंकॉक में हुए यूथ ओलंपिक में हिस्सा लिया और रजत पदक जीता जो उनका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहला पदक था। इसके बाद नीरज ने 2016 में एशियन जूनियर चैंपियनशिप में भी रजत पदक अपने नाम किया।

इसी साल उन्होंने विश्व चैंपियनशिप में स्वर्ण पदक जीता। इस टूर्नामेंट में बेहतरीन प्रदर्शन के चलते नीरज को सेना में नौकरी मिली और उन्हें नायब सूबेदार की पदवी मिली। हालांकि, नीरज 2016 रियो ओलंपिक में हिस्सा नहीं ले सके थे।

राष्ट्रमंडल और एशियाई खेलों में जीता स्वर्ण

नीरज की अंतरराष्ट्री स्तर पर पहचान तब बनी जब उन्होंने गोल्ड कोस्ट में हुए 2018 राष्ट्रमंडल खेलों में स्वर्ण पदक जीता। फिर उन्होंने एशियाई खेलों में 88.07 मीटर का थ्रो कर स्वर्ण पदक अपने नाम किया। नीरज के लिए यह साल काफी अच्छा रहा और उन्होंने टोक्यो ओलंपिक की तैयारियां भी शुरू कर दी। हालांकि टोक्यो खेलों से एक साल पहले 2019 में नीरज चोट की समस्या से घिरे रहे। उन्हें कंधे की चोट की सर्जरी करानी पड़ी और महीनों तक वह खेल से दूर रहे। नीरज ने जनवरी 2020 में फील्ड पर वापसी की और दक्षिण अफ्रीका में हुए एक टूर्नामेंट में 87.86 मीटर का थ्रो कर टोक्यो ओलंपिक का टिकट पक्का किया। हालांकि, कोरोना महामारी के कारण टोक्यो ओलंपिक एक साल के लिए स्थगित हो गए और नीरज का इंतजार बढ़ गया।

टोक्यो में रचा इतिहास

नीरज टोक्यो ओलंपिक में प्रबल दावेदार के रूप में उतरे थे और उन्होंने टोक्यो में 87.58 मीटर का थ्रो फेंक स्वर्ण पदक अपने नाम कर लिया था। नीरज ओलंपिक में व्यक्तिगत स्वर्ण पदक जीतने वाले अभिनव बिंद्रा के बाद भारत के दूसरे एथलीट थे, जबकि ट्रैक एंड फील्ड में शीर्ष स्थान हासिल करने वाले पहले भारतीय थे। नीरज की इस उपलब्धि ने उनके करियर को एक नया आयाम दिया और उनकी गिनती भारत के शीर्ष एथलीटों में होने लगी। नीरज ने इसके बाद दोहा डायमंड लीग का खिताब भी अपने नाम किया और पेरिस ओलंपिक से पहले पिछले साल हुए एशियाई खेलों में स्वर्ण पदक जीता।

पेरिस में स्वर्ण से चूके

पेरिस ओलंपिक में नीरज से देश को स्वर्ण पदक जीतने की उम्मीद थी। नीरज ने क्वालिफिकेशन में 89.34 मीटर का थ्रो कर पहले ही प्रयास में स्वतः क्वालिफिकेशन मार्क को पार कर फाइनल के लिए क्वालिफाई कर लिया था। उनके इस प्रदर्शन के बाद नीरज से स्वर्ण लाने की उम्मीद और भी बढ़ गई थी। हालांकि, पाकिस्तान के अरशद नदीम ने ओलंपिक रिकॉर्ड तोड़ते हुए स्वर्ण पदक जीता और नीरज को रजत से संतोष करना पड़ा।

जाधव से अमन तक

.भारत ने जीते आठ पदक, नहीं आया स्वर्ण, कुश्ती में कैसा रहा भारत का इतिहास

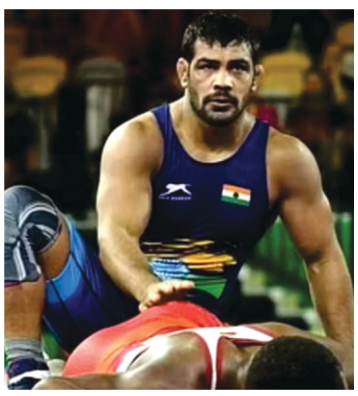

स्पोर्ट्स डेस्क। पहलवान अमन सहरावत ने 57 भारवर्ग में पुएर्टो रिको के डैरियन क्रूज को 13–5 से हराकर भारत को कांस्य पदक दिला दिया। पेरिस में यह भारत का छठा पदक है। अब भारत के खाते में पांच कांस्य और एक रजत पदक आ चुका है। कुश्ती में भारत ने लगातार पांचवें ओलंपिक में पदक जीतने का सिलसिला जारी रखा है। शुरुआत बीजिंग 2008 से हुई थी जब सुशील कुमार ने पदक दिलाया था। अमन बृहस्पतिवार को सेमीफाइनल में जापान के शीर्ष वरीय रेई हिगुची से पराजित हो गए थे लेकिन हिगुची के फाइनल में पहुंचने से अमन को रेपचेज में मौका मिला था जिसमें उन्होंने शानदार प्रदर्शन किया और एक बार बढ़त लेने के बाद पीछे मुड़कर नहीं देखा। पेरिस में भारत को कुश्ती में एक और पदक की उम्मीद थी। महिलाओं के 50 किलोग्राम भारवर्ग के सेमीफाइनल में विनेश फोगाट ने मुकाबला जीतकर फाइनल में जगह बनाई थी। हालांकि, बुधवार को उन्हें कैटेगरी से अधिक वजन होने के कारण अयोग्य घोषित कर दिया गया। फोगाट ओलंपिक फाइनल में पहुंचने वाली पहली महिला पहलवान बनी थीं। उनके पास स्वर्ण जीतकर इतिहास रचने का सुनहरा मौका था। ओलंपिक के इतिहास में भारत ने कुश्ती में अब तक आठ पदक जीते हैं। इनमें दो रजत और छह कांस्य हैं। अब तक भारत ने इस खेल में कोई स्वर्ण नहीं जीता है। इस लेख में हम भारत के कुश्ती में ओलंपिक के इतिहास में प्रदर्शन पर चर्चा करेंगे। आइए जानते हैं...

हेलसंकी ओलंपिक 1952

कुश्ती में भारत ने अपना पहला पदक हेलसिंकी ओलंपिक 1952 में जीता था। केडी जाधव ने पुरुषों की 57 किग्रा स्पर्धा में कांस्य पदक जीतकर इतिहास रचा था। जाधव ने जापान के शोहाची इशी के खिलाफ अपने पदक दौर के मुकाबले की शुरुआत की थी, लेकिन वह स्वर्ण नहीं जीत सके थे। यह ओलंपिक में स्वतंत्र भारत का कुश्ती में पहला पदक था।

बीलजग ओलंपिक 2008

भारत को अगला पदक 56 साल बाद बीजिंग ओलंपिक में 2008 में मिला। पहलवान सुशील कुमार ने पुरुष फ्रीस्टाइल 66 किग्रा स्पर्धा में कांस्य पदक अपने नाम किया था। सुशील कुमार ने यूक्रेन के एंड्री स्टैडनिक से हार के साथ शुरुआत की थी। हालांकि, स्टैडनिक के फाइनल में पहुंचने के साथ सुशील को रेपेचेज राउंड के जरिए पदक जीतने का दूसरा मौका मिला था।

लंदन ओलंपिक 2012

बीजिंग ओलंपिक में भारत के लिए कांस्य पदक जीतने वाले सुशील कुमार ने लंदन में भी अपनी प्रतिभा का दमदार प्रदर्शन किया। उन्होंने पुरुषों की 66 किग्रा स्पर्धा में में रजत पदक जीतकर इतिहास रचा था। वह व्यक्तिगत दो पदक जीतने वाले पहले भारतीय बने थे।

लंदन ओलंपिक 2012

सुशील कुमार के अलावा योगेश्वर दत्त ने लंदन ओलंपिक 2012 में कांस्य पदक जीता था। उन्होंने घुटने और पीठ की चोटों से जूझते हुए अपना पहला मुकाबला जीता था, लेकिन राउंड ऑफ 16 में विश्व चैंपियन बेसिक कुदुखोव से उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। हालांकि, कुदुखोव फाइनल में पहुंचने योगेश्वर को रेपेचेज राउंड के जरिए पदक जीतने का एक और मौका मिला था।

रियो ओलंपिक 2016

साक्षी मलिक ने रियो ओलंपिक 2016 में कांस्य पदक जीतकर भारत में महिला कुश्ती को एक नया अर्थ दिया। भारतीय महिला पहलवान ने अपने पहले दो मुकाबले जीते थे, लेकिन अंतिम आठ में उन्हें वेलेरिया कोब्लोवा से हार का सामना करना पड़ा। रेपचेज राउंड में साक्षी मलिक ने अपने दूसरे मौके का पूरा फायदा उठाया और अपने दोनों मुकाबले जीतकर कांस्य पदक अपने नाम किया था।

टोक्यो ओलंपिक 2020

रवि कुमार दहिया ने टोक्यो ओलंपिक 2020 में पुरुषों की फ्रीस्टाइल 57 किग्रा स्पर्धा में रजत पदक जीता था। उन्होंने टोक्यो में शानदार शुरुआत की थी। रवि ने कोलंबिया के ऑस्कर टाइगरोस (13–2) और बुल्गारिया के जॉर्जी वांगेलोव (14–4) को तकनीकी श्रेष्ठता के आधार पर हराकर सेमीफाइनल में प्रवेश किया था। इसके बाद उन्होंने कजाकिस्तान के नूरिस्लाम सनायेव के खिलाफ जीत था और फाइनल में पहुंचे। वह फाइनल में दो बार के विश्व चैंपियन जौर उग्यूव से हार गए थे और उन्हें रजत पदक से संतोष करना पड़ा था।

टोक्यो ओलंपिक 2020

भारतीय पहलवान बजरंग पूनिया ने टोक्यो ओलंपिक 2020 में पुरुष फ्रीस्टाइल 65 किग्रा स्पर्धा में कांस्य पदक जीता था। पदक मुकाबले में उन्होंने कजाकिस्तान के विश्व नंबर 3 दौलेट नियाजबेकोव को 8–0 से हराकर कांस्य अपने नाम किया था।

पेरिस ओलंपिक 2024

पहलवान अमन सहरावत ने पुरुषों की 57 किग्रा भारवर्ग कुश्ती में कांस्य पदक जीत लिया है। उन्होंने पुअर्तो रिको के पहलवान डैरियन टोई क्रूज को 13–5 से हरा दिया। पहले राउंड में ही अमन 6–3 से आगे चल रहे थे। दूसरे राउंड अमन ने इस बढ़त को और आगे बढ़ाया और क्रूज को कोई मौका नहीं दिया। इस तरह अमन सहरावत ने जीत हासिल की। अमन पेरिस ओलंपिक में भारत के एकमात्र पुरुष पहलवान थे। हालांकि, उन्होंने पदकों के सिलसिले को बरकरार रखा।

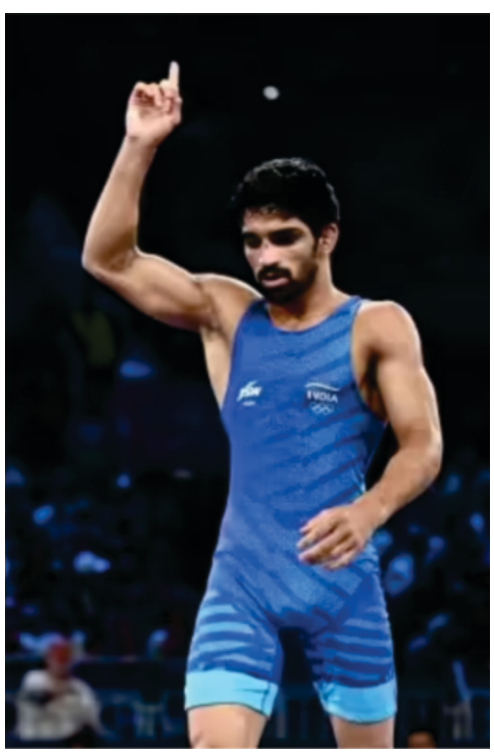

दी नेक्स्ट पोस्ट
स्वामी मुद्रक एवं प्रकाशक बृजेन्द्र कुमार द्वारा फाइन ऑफसेट प्रिन्टर्स मदरसा हुसैनिया बिल्डिंग बक्सीपुर गोरखपुर से मुद्रित एवं 665 बी गंगा टोला, निकट जानकी बिल्डिंग मैटेरियल बसारतपुर पश्चिमी, गोरखपुर से प्रकाशित। पिनः– 273003
Tital code: UPHIN51019
बृजेन्द्र कुमार
मो0. नं0. 7307180148,9170772370
Email- thenextpost01@gmail.com
नोटः– समाचार पत्र से सम्बन्धित सभी वाद-विवाद गोरखपुर जिला न्यायालय के अन्तर्गत मान्य होगे।